BUDS BLOOM

2020-21

VISION

To prepare-robust, empowered, efficient, responsible and contributing citizens.

MISSION

To impart state of the art knowledge to individuals in various disciplines and to inculcate in them a high degree of social consiousness and human values, thereby enabling them to face the challenges of life with valour and conviction.

Buds Bloom

2020-21

CHIEF PATRON

Mr. Vinod Kumar Yadav
(Chairman)

Ms. Nishi Yadav
(Manager)

PATRON

Mr. Gaurav Kumar
(Director)

Mr. Akhilesh Shukla
(Principal)

Dr. P. S. Salaria
(Academic Advisor)
(Ex. Deputy Commissioner N.V.S.)

EDITORIAL BOARD

CHIEF EDITOR

Mr. Amit Singh Chandel
Mr. Sudhir Singh Salaria

TEACHER EDITOR

Mr. Pradeep Shukla
Ms. Sangita Sharma
Mr. Jai Narayan Patel
Mr. Krishna Kumar Bajpai
Ms. Monika Shukla
Mr. Mohammad Umar
Mr. Ajay Kumar
Mr. Mukesh Singh
Ms. Niharika Mishra
Ms. Deepika Shukla
Ms. Shweta Gupta
Mr. Ram Kishor Maurya
Mr. Durga Prasad Tiwari
Mr. Pankaj Singh

DESIGN & GRAPHICS

Mr. Ranveer Srivastava
Mr. B. D. Pandey
Mr. Brijesh Kumar Yadav
Mr. Anoop Sharma
Ms. Anju Singh
Ms. Suman Gupta
Ms. Soma Haldar

Chairman's Message

Mr. Vinod Kumar Yadav

''आशाओं की पूर्ति हेतु सतत् संघर्ष जीवन व्यवस्थित होने का प्रकटीकरण है।''

मेरे लिए अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि शैक्षणिक सत्र 2020–21 हेतु विद्यालय अपनी वार्षिक पत्रिका ''बड्स ब्लूम'' के आगामी अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। कोविड–19 जैसी चुनौती को स्वीकार करते हुए सीमित समय में संपादकीय विभाग द्वारा पत्रिका का सफल प्रकाशन एक सराहनीय कार्य है। इसके लिए निश्चय ही कठोर परिश्रम, एकाग्रता व आत्मबल की आवश्यकता पड़ती है। मैं इस कार्य हेतु आप सभी विद्वतजनों को हार्दिक बधाई व धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

प्रकाशित पत्रिका से यह सिद्ध होता है कि यदि जीवन में प्राथमिकताएँ सुनिश्चत हों, समय के साथ निरंतर लगन व परिश्रम हो तो हम निश्चित दिशा में नई ऊर्जा के साथ समय प्रबंधन करते हुए अपने ध्येय को प्राप्त कर सकते हैं। हम सभी जानते हैं कि विकास के लिए संघर्ष जरूरी है। हमारी अन्तर्निहित शक्तियाँ ऐसे ही संघर्षों के दौरान विकसित होती हैं। इसलिए चुनौतियाँ स्वीकार करना जरूरी है। संघर्ष हमें आरम्भ में भले ही कष्ट प्रद प्रतीत हो, लेकिन यही वास्तव में हमें संवारकर नई पहचान दिलाता है। बाद में हमारा यही संघर्ष दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाता है।

मेरी मंगल कामना है कि विद्यालय के सभी बच्चे अपनी सकारात्मक सोच, शिक्षक प्रदत्त अनुभवजन्य ज्ञान, अच्छी आदतों, सहृदयता व समायोजन के साथ सफलता के उच्चतम शिखर तक पहुँचे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित!

Manager's Message

Ms. Nishi Yadav

''किसी कार्य के प्रति भावना जितनी ऊँची होगी, आप कर्त्तव्य भी उतनी उत्कृष्टता से करेंगे।''

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि रेडिएण्ट एकेडमी अपनी वार्षिक पत्रिका ''बड्स ब्लूम'' का अग्रिमांक प्रकाशित करने जा रहा है। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपना अद्वितीय योगदान देने वाले संपादक शिक्षकों व विद्यार्थियों की भूरि–भूरि प्रशंसा करती हूँ। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रचण्ड मेधाशक्ति से आप्यायित होकर सात्विक क्षमता का संचार करते हुए आपके व्यक्तित्व को एक नया आयाम देगी।

आज देखा जाए तो प्रत्येक व्यक्ति की जीवन–शैली परिवर्तित होती जा रही है। वह जो भी सोचता है, इच्छा करता है, वह पा लेता है। परन्तु क्या सब कुछ पाना ही अभीष्ट है? क्या हमें वास्तविक आनन्द के स्रोत का पता नहीं लगाना चाहिए? वास्तविक आनन्द हमारे जीवन की नित–प्रति की उपलब्धियों पर निर्भर है। इसलिए विज्ञान, साहित्य और कला के क्षेत्रों में अपनी अभिरुचियों का विकास करते हुए उन्हें नया आयाम दें। हमारा मन संतुलित जीवन–शैली की शुभ–मुहूर्त पर उगती धूप की तरह ताजगी भरा हो। हमारे पास विश्वास, साहस, उमंग और संकल्पित मन हो। हमें अपने व्यवहार, आदतों और संबंधों का परिष्कार करना चाहिए। अपने जीवन में खुशियों और संपूर्णता के अवतरण के लिए जीवन के प्रति एक नए नजरिए को अपनाना चाहिए और वह नया नजरिया है–निरंतर स्वयं को बदलने के विषय में सोचना। इसलिए मेरी कामना है कि आप हमेशा अपनी मौलिकता एवं एकाग्रता से कुछ नया सोचें, बड़ा सोचें और एक ऐसी दुनिया बसाएँ जो अप्रत्याशित और कल्पनातीत हो।

मंगलमय भविष्य की शुभेच्छाओं के साथ!

Director's Pen

Mr. Gaurav Kumar

Finding Opportunity In Adversity Is One Of The Objectives Of Learning

This year, though tough for Students, teachers and School Management, it provided ample opportunity for us to grow and adapt. I am happy to share that as a Unit, out skill levels have improved in ICT. We have found better ways of creating and delivering content. Google Classrooms have provided us the opportunity to connect with students on unscheduled leaves. Looking with a very positive outlook for the year 2021, I wish all the students and teachers good luck. Personally, I can't wait to see the kids out in the playground.

Principal's Desk

Mr. Akhilesh Shukla

'Optimism is another name for survival instinct that prompts fighting spirit even in the adverse situation.'

2020-21, a very eventful year, has really tasted our nerves, but the combating spirit of human being paved the ways to convert challenges into opportunities. Due to Covid-19 threat, educational institutes remain closed almost for the whole session leaving for lots of premonitions. But the fighting spirit of our teachers with due support and cooperation from all the stakeholders made things go the way they should.

The 11th edition of Annual School Magazine in your hands, is an embodiment of innovation and commitment of our teachers & students. They fought like anything and toiled hard to release the current edition of School Magazine.

Congratulations to the members of editorial team in their endeavor for timely release of the current Magazine.

I would like to avail this opportunity to thank all the parents and students for their active support.

My special thanks are reserved for school Management for their logistic support.

Thanks & Regards!

Editors' Notes

Mr. Amit Singh Chandel

''जीवन में ज्ञान व आचरण की शिक्षा की यह पाठशाला कभी बंद नहीं होती ''।

अल्पाअवधि में ''बड्स ब्लूम'' का यह अभिनव संस्करण निश्चय ही हमारे ज्योतिर्मानों की विविध भावोद्भाविनी सूक्ष्म बाल मनोवृत्तियों की सप्तरंगी गतिविधियों का मनोरम व जीवंत दस्तावेज है। मैं एकेडमी के उच्च अधिकारियों से प्राप्त हार्दिक संदेश एवं अमूल्य शुभ कामनाओं हेतु कृतज्ञता अर्पित करता हूँ। साथ ही संपादकीय विभाग के सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अथक प्रयासों से पत्रिका संपादन का कार्य समय पर पूर्ण हो सका।

हर इंसान के भीतर छोटा लेकिन असीम शक्ति समेटे ऊर्जा का अनंत स्रोत है, जो बाहर फूट पड़ने के इंतजार में रहता है। इसके लिए जरूरी है कि हम अपनी समग्र उन्नति हेतु निरंतर उद्यमशील रहें तथा अपनी–अपनी स्वाभाविक प्रकृति, स्थिति और योग्यता के अनुसार अपनी कार्यकुशलता का प्रदर्शन करते हुए रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहें। किसी भी यथेष्ट की प्राप्ति हेतु हम सभी में विश्वास और साहस इतना बुलंद हो कि हर विपरीत स्थिति में भी सहजता व रचनात्मक गुणों को आत्मसात् करते रहें। हमारा अन्तिम लक्ष्य है–बच्चों की समग्र प्रगति का नाटक समय के पर्दे पर देखना। इसलिए हम सभी मिलकर विद्यालय रूपी प्रयोगशाला में अपने सम्मिलित अनुभवों व प्रयासों का निरंतर प्रयोग करते हैं। हमारे यही उन्नत प्रयास ही आगे चलकर सौभाग्य बनेंगे और इसके हम सभी साक्षी बनना चाहेंगे।

अन्ततः आशा है कि पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए आप अपने सुझाव देकर हमें कृतार्थ करेंगे।

पुनः आप सभी का आभार व अभिनन्दन!

Editors' Notes

Mr. Sudhir Singh Salaria

Dear Readers,

Welcome you all to the 11th edition of Buds Bloom, our Annual School Magazine. When the world is combating Covid 19, Radiant Academy has added another feather to its cap; the School Magazine, to provide the students an opportunity to exhibit their creative thoughts.

Micheal Jordan said, "Talents win games, but teamwork and intelligence win championships". This magazine is a collaborative endeavour by our emerging writers, poets and artists, who worked with determination, persistence and sedulity. We are sure that their creations will transport you to the world of imagination.

We are very much thankful to all the parents for extending hands of cooperation.

The editorial team expresses its sincere gratitude to the Principal, Mr A. Shukla, for entrusting faith on us, and the Management of the school for their guidance and valuable support.

Thanks & Regards!

EDITORIAL TEAM

Teacher (L-R) : (Sitting) Ms. Shweta Gupta, Ms. Niharika Mishra, Ms. Deepika Shukla, Ms. Monika Shukla, Ms. Sangita Sharma, Mr. Akhilesh Shukla (Principal), Mr. Sudhir Singh Salaria, Mr. Pradeep Shukla, Mr. Amit Singh Chandel, Mr. Ram Kishor Maurya, Mr. Durga Prasad Tiwari

Teacher (L-R) : (Standing) Mr. Mukesh Singh, Mr. Mohammad Umar, Mr. Jai Narayan Patel, Mr. K. K. Bajpai, Mr. Ajay Kumar, Mr. Hariom Srivastav, Mr. Pankaj Singh

INDEX

Content	Page No.
World of Tiny-Tots	**01-02**
English Section	**03-27**
My Dreams	03
Self Assessment	04
Father : An Unsung Hero	05
Born Vip	06
Happiness	07
The Two-hour Routine	08
The House Of Grammar	09
Lovely Radiant	09
I Didn't Have To..	09
The Tragedy of An Incandescent Light Bulb	10
Ambition	11
The Best Days of Life	12
Science And Technology	13-14
National Education Policy 2020	15-16
What Makes One Grow Old?	17-18
We Have Left Behind	19
I Miss My School	19
Dream: A Reality Or Illusion	20
Old Rhymes In New Times	21
My Favourite Book	22
My Toothpaste	22
My Soap	22
Relatives	23
Importance of Water	24
Maggi : In 2 Minutes	24
A Place I Like To Visit	24
Corona–A Life Changer	25-26
Synaptic Pruning	27
Parents Speak	28-29
Annual Report 2020-21	30-31
हिंदी अनुभाग	**32-52**
मनाली का सफर	32
एक सैर कुशीनगर की	33
वैज्ञानिक दृष्टिकोण समय की माँग है	34
प्रकृति के संग	35
यदि प्रकृति में रंग नहीं होते ?	35
मैं एक मोबाइल हूँ	36

Content	Page No.
उठो, देर न करो	36
आगे बढना ही जिंदगी है	37
कोरोना, कोरोना इतना भी परेशान करो ना	38
आत्मनिर्भर भारत	39–40
मेरे जीवन का लक्ष्य	40
डर लगता है	41
फिर स्कूल चले हम	42
चलो किताबें खरीदें	43
मेरी माँ	44
प्यारी माँ	44
पेड़ हमारे प्यारे हैं	44
क्या विनाश का कारण प्रदूषण होगा?	45
यदि मैं पक्षी होता !	46
यादों के झरोखों से	47
मेरी प्यारी शिक्षिका	47
बाधाओं से क्यूँ डरना	48
हौसले की उड़ान	48
एक आस	48
बेटी	49
हम बच्चे	49
जीवन अनमोल है	50
मेरा परिवार	50
स्त्री जीवन	50
शिक्षक हैं मेरे भगवान	50
बस्ता	51
बैग नहीं दोस्त है मेरा	51
इंसानियत है अनमोल	51
पुस्तक समीक्षा	52
Inter House Champions	53
Republic Day Celebration	54
Annual Day Celebration (Virtual)	55
School In Action	56-58
Spark Plugs X	59
Path Finders XII	60
Adieu	61-65
School Facilitators	66-68
Creative Strokes	69-71

WORLD OF TINY-TOTS

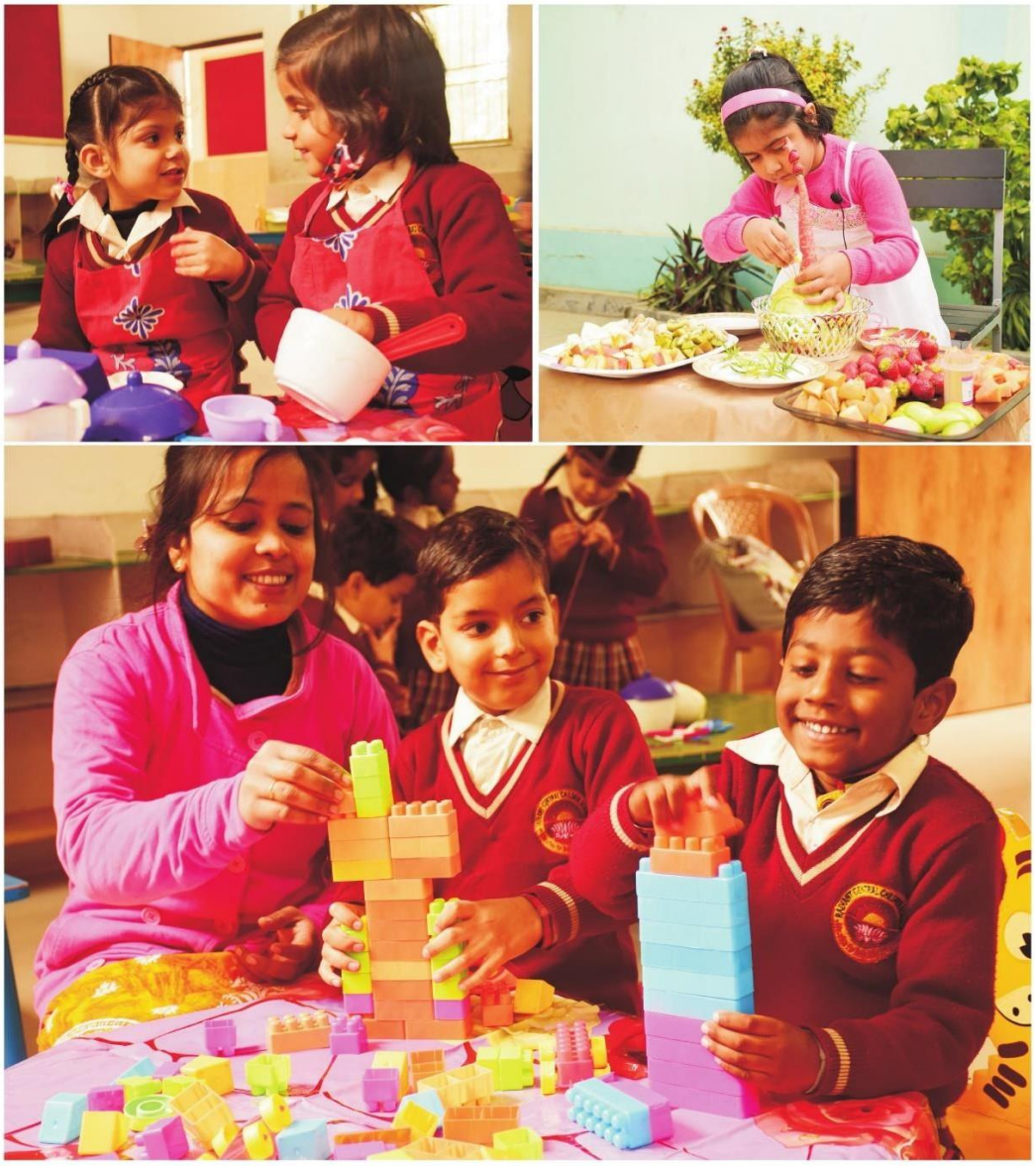

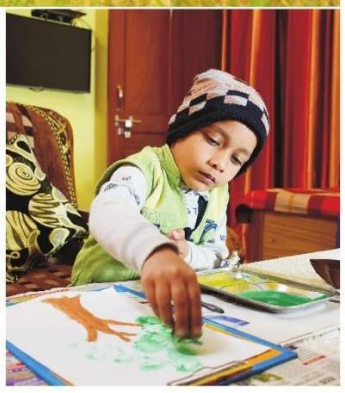

MY DREAMS

I want to swim
In my dreams,
I want to fly
That's why I
need wings,
I want to feel
the rain
How it drops
like a chain,
I want to touch
the nature
How it creates
beauty in the
creature,
I want to smell
the flower
How it blooms
in the shower,
I want to hear
the songs of birds
How beautifully
they sing without
words,
I want to live the
life of my dreams
Like the fairy tales
of kings and queens.

Zakiya Anjum (XII-F)

SELF ASSESSMENT

"Self-Assessment is the ultimate key to success". If we want to be successful, we need to evaluate ourselves critically and not just simply go by what other people say about us. It is not possible to please everyone around us. If we try to do so, we will be nowhere in the society. Nobody knows us better than we know about ourselves and all we need to do is just listen to our inner voice and follow what we think is right.

Self-assessment helps us to discover our strengths and weakness. It will enable us to horn our skills, polish our strength and work on our weakness. We often are pleased by anyone who is successful in his life and follow his path to get success in our life. But this is simply waste of time because no two people are similar. We all have different viewpoints, strength, aims and the environment in which we live in. Self-assessment helps us to introspect ourselves.

Thus, if we know what we are good at, what gives us happiness, we should never follow others for our success.

A successful person is one who critically evaluates oneself and works to bring perfection within him/her. Self-evaluation helps us to know the purpose of our life and hence helps us to lead a meaningful life.

A successful person is one who critically evaluates oneself and works to bring perfection within him/her.

Srishti Yadav (XII-E)

Father : An Unsung Hero

"Fathers are the most ordinary men who are turned by love into the biggest hero, adventurer, storyteller and singer." There is no alternative for mother. She is the reason for healthy and happy life. She is undoubtedly the crown of her family and nobody denies this fact. There is lot of literature available where the writers have expressed their gratitude towards their mother, daughter, sister, in the form of story, article or poem. Writing about a mother is joyful. But writing about father is quite difficult. A father plays an important role in every child's life. To be a father, one needs to be strong, patient, sympathetic and lovable. A good father is one of the most unsung, unnoticed and yet one of the most valuable assets in our life. Fathers like mothers, are pillars in the development of a child's emotional well-being. Children look to their fathers to lay down the rules and enforce them. They also look to their fathers to provide a feeling of security both physical and emotional. Studies have shown that affectionate and supportive father helps child's cognitive and social growth. Young girls depend on their father for security and emotional support. A father always makes his little baby into a caring and strong woman. Even if his pockets are empty, he will never refuse to give up. I haven't seen anyone stronger and richer than "FATHER".

"The smile on child's face is what a father always desires for".

Daniya Athar (VIII-A)

BORN VIP

World is not a bed of roses for everybody. It has thorns too. The world is divided into can and can not. Now lets put things into perspective.

If you can hear, if you can stand on your legs and work with your hands, if you have roof on your head, if you can read, think, then you are VIP. Many have less than what you have.

Let me tell you a Story-
An old man with his young son boarded a train. When the train started moving, his son got very excited. He was sitting near the window and started looking outside. After some time, he said to his father "See Dad, all trees are moving back". His dad looked at him and gave a smile. Suddenly rainfall started and some of the drops of rain started falling on the hands of young boy. He again said "Dad the drops of rain are so beautiful!". This time the travellers were uncomfortable. One traveller said "Why you didn't go to good hospital for your son's treatment. He is behaving hysterically for such a normal thing". The father replied peacefully "We are coming from a Hospital. Today my son has seen this world for the first time. He had been blind since his birth". All travellers were shocked.

That young boy in the story could only understand the value of eyes who was blind since birth rather than the travellers on the train. The value of food can be understood by only those people who can't even afford a meal every day. The day when you accept this truth, you will start realizing that you are definitely a **VIP**.

Rashika Singh (VIII-A)

Happiness

"Happiness is the spiritual experience of living every minute with love, grace, and gratitude."— Denis Whitely

Life, at every moment checks your strength, ability and belief. Your beliefs define your stature, personality and success. If you believe that you don't deserve, you will not be able to achieve success and happiness in your life but if you believe in yourself, nothing can stop you from achieving what you want.

We face difficult situations. While some tragedies are worse than others, there's often nothing much we can do other than accepting the situation and moving on.

Sadhguru has rightly said, "Our experience of life is determined by us, not by what's happening around us."

A slight shift in mindset can add up to your happiness. There's a magic in your smile, which makes you happy, even if you have nothing to laugh about.

Mukesh Singh (TGT English)

THE TWO-HOUR ROUTINE

Trriing! Trriing!
Trriing Trriing !
Suddenly, I woke up and looked around wildly, wondering where on earth this horrendous sound was coming from. My eyes settled on my alarm clock, which was still showing off its shrill voice. Great! I thought to myself, why in the world did the morning have to come so early?
It was already seven in the morning and I had to reach my school by eight. As usual I hated leaving my cozy bed. But finally I dragged myself out of my bed and went in for shower.
People always talk about 'Maniac Monday.But it was Saturday instead of Monday. So this was the reason for my unwillingness to go to school. Last night I had watched a movie till late, so I was even more sleepy.
Finally, I was ready for my school and went to pick up my friend, Neha. The moment I entered her house, I heard Neha screaming to someone at the top of her lungs- "Hi! I'm here in my room. Hurry, I have to ask you something major" Sure enough, it was – What do I wear?
Fifteen minutes later, we were on the scooty and zooming towards the school. We were on time for the lecture, much to my surprise and sat at our usual place for our 'round-table conference'.
The lecture began and drowsy as I was, I had to fight to keep my eyes open, especially since my lecturer, Mr. Rajesh Pathak, had the eyes of an eagle and not only would he keep watching me, but also directed his questions at me and that was something I did not want to risk!
I glanced over at Neha and it looked as if she herself was doing her best to look alert. I surveyed around to check out others and I was rather amused to see more or less the same expression. It was a fact that none of us liked to study on the weekend. I caught Disha's eye and we smiled at each other but before we could react.
I was trying to pay attention to whatever was taught in the class that day but again and again my mind was wandering in Ambedkar Park in Lucknow, where we had made plan to go the next day.
Once the school was over, energy was back. All the students were out with smile on their face.
Finally, Weekend!
It was a strange thing. Just five minutes ago, it was feeling drowsy, and now my eyes were as wide open as an owl's! We left the school, gossiping about our plans for the weekend. It was amazing how lively a bunch of ten girls could suddenly get. Trisha and Neha brought me back by telling me that we would be watching 'Troy' after our long awaited visit to the Ambedkar Park, the next day.
Having spent the rest of the day, shopping, we all started our journey back to our respective home, laughing, playing and chirping.

Sanskriti Singh (XII D)

The House of Grammar

There is a beautiful house called 'Grammar' in the city of English. There are 6 members living in it. They are –
Noun-The father who does the main work.
Verb- The mother, who is responsible for the rest of the work.
Pronoun-The elder son who takes the place of father in his absence.
Adjective–The younger daughter who keeps on commenting on her father.
Adverb–The son who is always behind his mother commenting on her.
Conjunction- The grandmother who brings peace between them when they quarrel.

Manya Singh (VI-D)

Lovely Radiant

My school Radiant College,
Gives us good knowledge.
There are lovely lawns,
Like a beautiful daylight till dawn.
There are great teachers,
Who teach and preach us.
Our Principal is very nice,
He is kind and wise.
There are small children,
Like flowers in the garden.
I like my school very much.

Ankush Yadav (X-B)

I Didn't Have To..

I wish I didn't have to go to school,
My life would be so cool.
I would play the whole day,
And my heart would be happy and gay.
I wish I didn't have to take my exams,
My mind would be so calm.
I wish I didn't have to eat vegetables,
Only biscuits and chocolates on my table.
I would sleep in my cozy and warm bed,
Others would prepare their morning bread.
If the things happened this way,
Every day I would say,
This life is so easy.
Happy and crazy.

Astuti Singh (VIII-B)

The Tragedy of an Incandescent Light Bulb

.....Now, Rohit may be studying his favourite story book. You must be thinking that who is Rohit? He was my room mate. The room where I was connected with the switch board.

Don't scratch your head to figure out who I am.

I am an incandescent light bulb with that old fashion coiled tungsten wire.

There was a time when I was young, beautiful and luminous. I was proud of my blazing personality. People were afraid to touch me.

One fine evening Rohit's father came to the shop. He hurriedly grabbed and put me inside the pocket of his long coat, before I could figure out what's happening
with me.

Once he reached home, he straight away went to a room and fixed me on the socket. When he switched me on, I was surprised to see the beautiful room and little kid smiling at me. I was happy as I always wanted to spend time with someone of my age.

I had spent the best days of my life with him. He switched me on and off every now and then. Morning time was sleeping hours for me. In the evening I spent time reading books with Rohit and at night I went to bed with Rohit again. During leisure time, I played hide and seek with Rohit and his friends. I couldn't talk to Rohit but that didn't make me sad. I enjoyed watching his mischievous activities and how his mother would run behind him to make him eat food. Days passed by and I kept on enjoying Rohit's company.

One day Rohit's father brought a new LED bulb. I realized it was my last day with Rohit. It was not the mistake of LED bulb so I welcomed him with a smile. The pain of separation was agonizing. All I could do was to see Rohit through window, while van was taking me to the junkyard.

I miss those days when I was young. Everyone loved me. Now I'm nothing but a waste, sitting on the garbage.

Suddenly I was thrown into air by a gusty wave and broke into many pieces. Remembering the best time of my life, I released my last breath.

Navneet Yadav (XII-D)

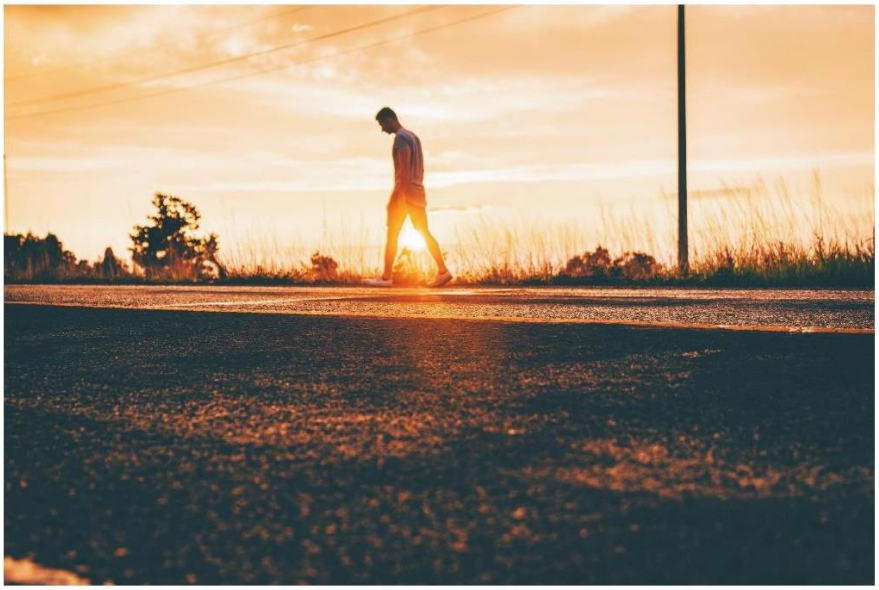

Ambition

It was at the age of four,
My mother was doing her daily chore.
She was cleaning the kitchen,
When she told me the meaning of ambition.
It meant fixing a goal and achieving it.
Hard to understand being a kid.
At the age of five,
My father taught me how to dive.
He said, "One day you'll be a great swimmer.
But the very sight of water made me shiver.
From the age of six till eleven,
I thought of reaching to the heaven.
At the age of twelve,
There was no ambition suited well .
My mother wanted me to become a dentist.
My father asked me to become a scientist.
I was surrounded by confusion,
It was hard to come to any conclusion.
When I was fourteen years' old
All I could think about was money and gold
Now I am fifteen years old.
I hardly care about money and gold.
I think I have that quality,
To change my dreams into reality.
Someday even I will be a great person
Like President Kalam or Issac Newton.

Keshav Mishra (X-B)

The Best Days of Life

Gang of friends, School uniforms, combined study, silly fights, rocking annual days and so many hands in a single lunch box. I hope all of you know what I am talking about. Yes, I am talking about the school life.

The beauty of school life lies in the support and guidance of teachers, who are just like our parents and class mates, who always support us like our siblings.

When I realize that this is going to be my final year in this school, I was not able to control my emotions. The idea of leaving the school started giving me Goose bumps. The teachers and students, who were part of my life, suddenly became strangers to me.

All of a sudden I started recalling all the moments which I had shared with my school friends and my teachers. I started visualizing my life after school. My School was just like second home for me and to my surprise the life was terrific.

We enjoy breaking rules, but after school life, we will be fighting for our own cause. There won't be any teacher to guide us. We will be independent to do whatever we like. During school life this is the independence we are asking for but in future when we move out of the school, we will be able to know the importance of being dependent.

My feeling for the school and school life can be represented by beautiful song sung by Bryan Adams.

"Oh when I look back now, those days sum,
To last forever and if had the choice,
Yeah I'd always wanna be there
Those are the best days of my life.....

Anshika Yadav (XII-D)

Science and Technology

"Science and technology, like fire, can either cook man's food or cook the man himself".

Nothing is harmful until is used with harmful intentions. Similarly, science and technology is not disastrous in itself. It is the inhumane use that makes it so. Alfred Nobel, one of the most renowned scientists was criticized when he invented dynamite. However, later on when it was used to clear mountains and rocks while making roads across rough, mountainous terrains, his invention was highly praised.

In Berlin, the terrorists killed many innocent people by ramming lorries into the crowded areas. Here the attention is the culprit as the same lorries are used for transporting goods. So Lorries were not the cause of the disaster, the men behind the steering wheels of the lorries are to be blamed. Science is exactly like those lorries.

Science and Technology have given man innumerable machines, gadgets and devices such as T.V., A.C., Computer, Vehicles, Internet, Smartphones etc. These things have made the life easy and full of comfort. Science and Technology have the potential to solve all the man's problems and challenge is to put it to right use. But this potential is not being explored. Man is busy misusing science. For example – our planet earth has so much of uranium, thorium, plutonium etc. that if used optimally, abundant power can be generated for all the people on the planet.

We are focused on creating deadly nuclear weapons from the resources given to us by the nature.

All the problems pertaining to pollution, environmental degradation etc. can be solved using Science and Technology. All the cities of the world can be converted into smart cities using science, all the vehicles that emit toxic gases can be converted into zero emission vehicles using science, all the sewage, garbage, effluents, toxic fumes coming out of chimneys can be turned into non-polluting substances using science. However, this is being done only in the most advanced countries.

Collective effort by all the stakeholders is the need of the hour to think and introspect. We all need to think about where we are going , why we are going, what are we doing and why we are doing. That's the only way we will be able to solve the problems around us.

Riya Singh (XI-B)

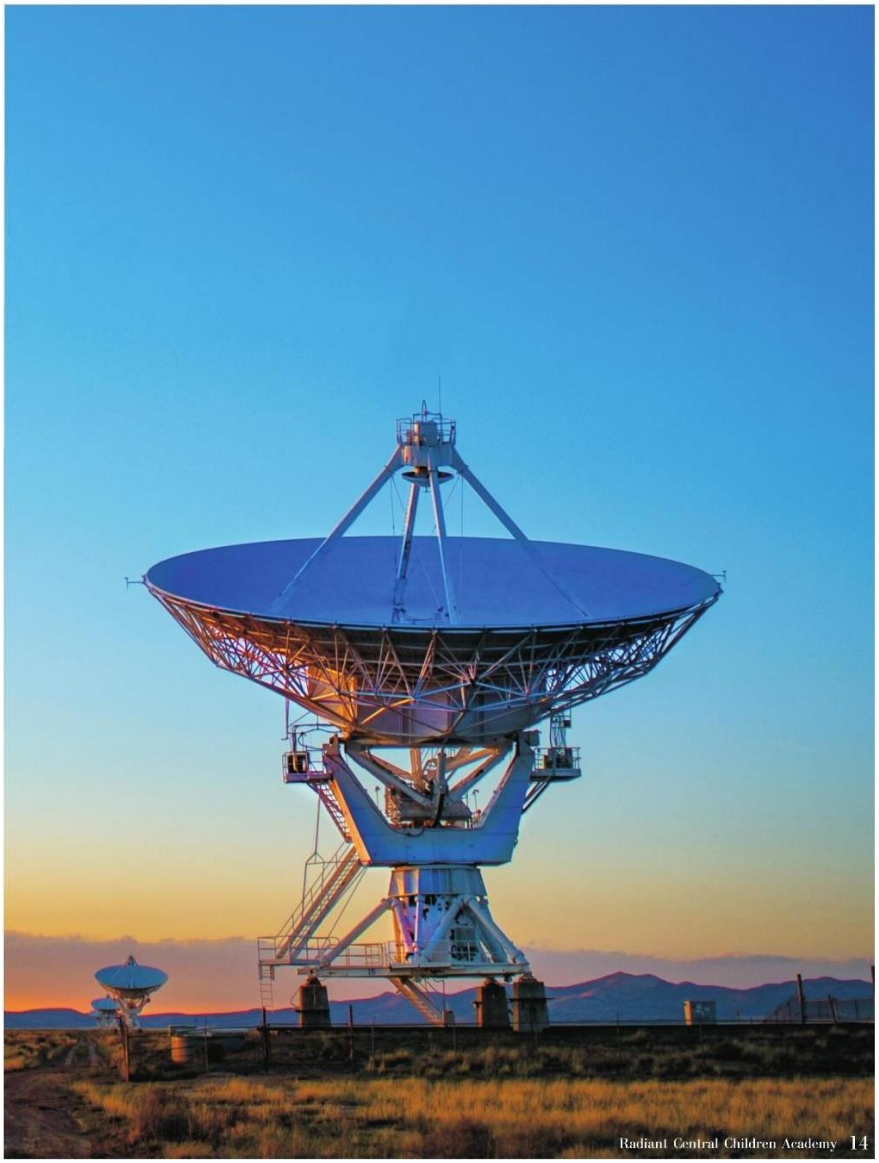

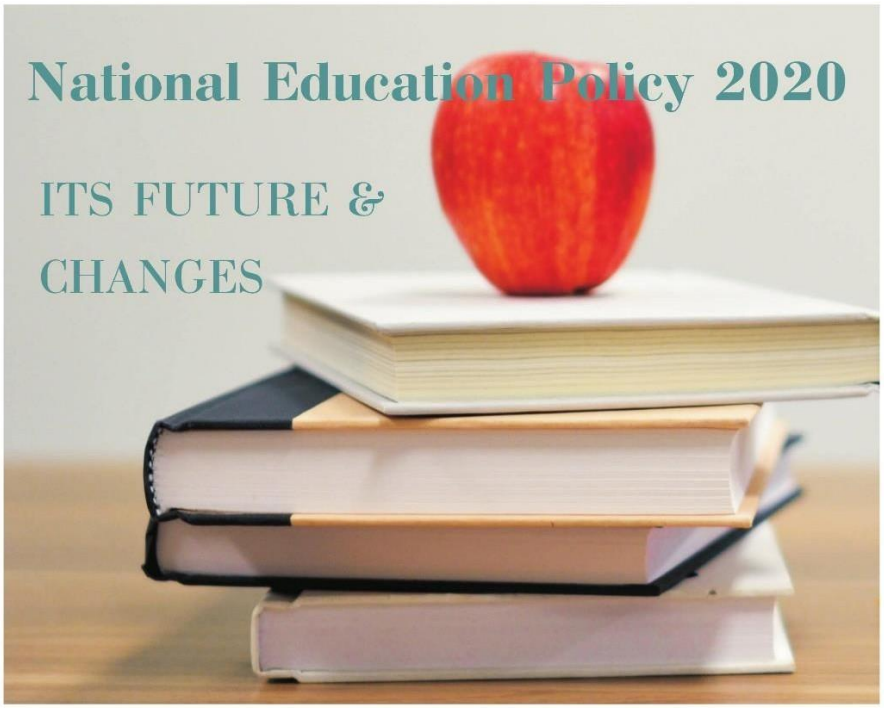

Union Cabinet of India approved New Education Policy on 29 July 2020 to outline the vision of India's new education system.

NEP is framed to achieve quality based education along with multidisciplinary learning, experiential learning, art integration and many more, while at the same time prepare them for gainful, fulfilling employment.

It is based on the principle that education must develop not only cognitive capacities - both the 'foundational capacities 'of literacy and numeracy and 'higher-order' cognitive capacities, such as critical thinking and problem solving – but also social, ethical, and emotional capacities and dispositions. It emphasizes on three language system; Mother tongue, Regional Language & English. It changes the traditional schooling system 10+2 to 5+3+3+4.

It also aims to increase the public investment in the Education sector to reach 6% of GDP at the earliest.

NEP along with the aforesaid qualities has some drawbacks that need to improve.

Provision of exam have been maid in XII only and in X it has been removed. Time will tell whether decision is good or bad.

English is optional till class 8.Government school will dismiss the language and it would be difficult for the child to grab the basics after class 8.

The separate slot for multi-

discipline in NEP which is attractive and flexible at the same time. But the options given are not enough. Some important areas are still missing such as environmental studies, women's studies, cultural studies, etc. These options must be explored and taught as well.

There must be regular teachers' training as they have to shape the child keeping in view the Education Policy.

In the NEP nothing is mentioned about the funding for teachers training, which is the need for an hour. Proper funding, infrastructure must be provided in order to make the NEP worthy.

India has target to achieve NEP in schools' education system by 2040 that is second to none, with equitable access to the highest-quality education for all learners regardless of social or economic background.

NEP is a progressive shift towards a more scientific approach to education. The prescribed structure will help to cater the ability of the child – stages of cognitive development as well as social and physical awareness.

If implemented in its true vision, the new structure can bring India at par with the leading countries of the world.

Rahul Jaiswal (PGT Commerce)

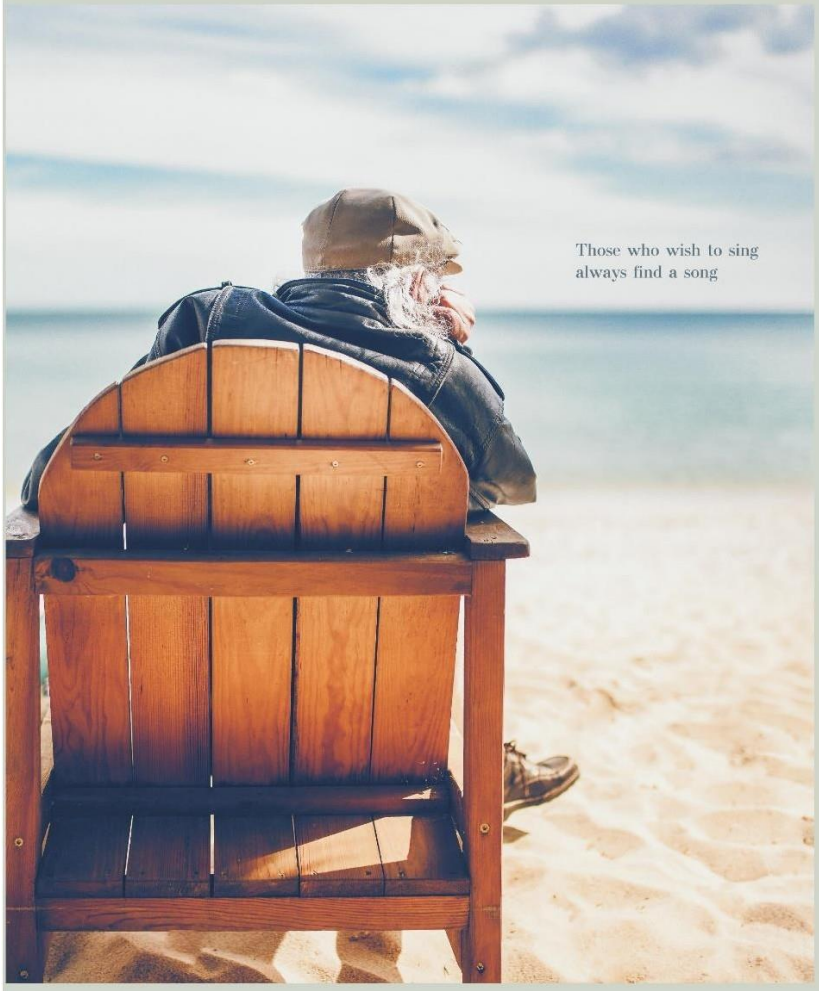
Those who wish to sing
always find a song

WHAT MAKES ONE GROW OLD?

How many times in life does one meet people who become pacifists because they are afraid to fight, who long for rest before they have earned it, who are satisfied with a little progress. Their imagination & desires make it into a marvelous realization so as to justify their stopping half-way.

In ordinary life, this happen every now and then. Indeed, this is the bourgeois ideal, which has deadened mankind into what he is now.

"Work while you are young, accumulate wealth, honour, position, have a little foresight, put something by, become an official- so that when you are forty you can sit down & enjoy your income & later your pension."

I think, to sit down, to stop on the way, not to move forward, to go to sleep, to go downhill towards the grave before one's time means cease to live the purpose of life.

Always remember that the moment one is satisfied and no longer aspires, one begins to die.

Life is movement, it is an effort, it is to march forward, climb towards new revelations, towards future realizations. Nothing is more dangerous than wanting to rest. Say to yourself "Ambition has no rest".

Old age does not come from number of years but from the incapacity or the refusal to grow and progress. I know old people of twenty and young people of seventy. The moment one thinks to settle down in life before he has achieved anything, he ceases to exist which means as soon as one ceases to progress along the road of perfection, one is sure to fall back and become old.

The determining power is within you. There is a Swedish proverb which says "Those who wish to sing always find a song"

Yes: it is a matter of our own attitude that creates circumstances for you. Thus the determining power is within you!!!

Md. Faiz (PGT Accountancy)

WE HAVE LEFT BEHIND

The way we unite
The day when we cried
The day we celebrate
The way we irritate
Scene we shared in our drama classes
always remember ponds and big grasses
The ponds smell makes us mad
But science period makes us glad
Roaming in lunch time, wasn't in our habit
But mean while sharing table along with duster was our gadget
Study time was our serious time
As if we use to play more
Copying teachers was bit crazy,
But even then we do it, and become hazy.
Still remember our free time,
Having fun and doing small crimes.
Now we are at the stage,
Where we have to keep ourselves in cage,
All time stay focused and study.
No distraction, No need of any day
We have started with us And we are only left with I
As we have left behind.....

Vaishnavi Mishra (XII-E)

I Miss My School

I miss my school
Didn't think I would
But now I think it's cool
I miss my friends
Can't wait to see them
When lockdown ends.
I will do my best
And concentrate
When I do my test
When my test is done
I will feel relief.
And go out to have some sun.
I thought lessons were boring
But is better than
Being at home bored and snoring
Being at home makes me sad
Its made me realize
School's not that bad.
I miss school.

Shweta Yadav (XII-D)

DREAM: A REALITY OR ILLUSION

I saw my morn glitter in diamond dew,
The butterflies flapping their wings over blossoming hues,
I saw sunshine over the stream,
It seemed Nature's glamour in a dream.
I saw everything with eyes without insight,
Within I could seek some might,
If I could pick juicy fruit from the branches of fate,
And consume them till all fancy mitigates.
But alas! Destiny's plan could never be disapproved,
And in front of it no heart could approve,
To challenge temptation and human desire,
It is a useless endeavour till the moon be admired.
I felt the passion in me too firm,
Let life its journey through tempests confirm.
I spread my wings as the wind blew,
My thoughts like angels immediately flew
I built a castle of my dreams,
It was haloed with golden yellow gleams.
It stood completely filled with immortal pleasure,
It glittered like a jewel beyond measure
The winds chased the mists at dawn,
This moment was not to mourn.
When morn pointed fingers towards the sky,
For it is darkness she must defy.
It stood against every hardship and woe,
It in a paradise did enshrine,
Its wonder I knew to be purely mine.
When my heart throws reflections of tomorrow,
I sink into clouds of many illusions,
My heart's filled with many visions,
There stands the castle of my desire,
And as these days that continuously admire,
Suddenly I hear an imp on my shoulder say-
"It is about a dream, when dawn gleams, it will fade away."
Alas! Man's a wonderful dreamer – The world knows,
For destiny has its own plan-wherever he goes?

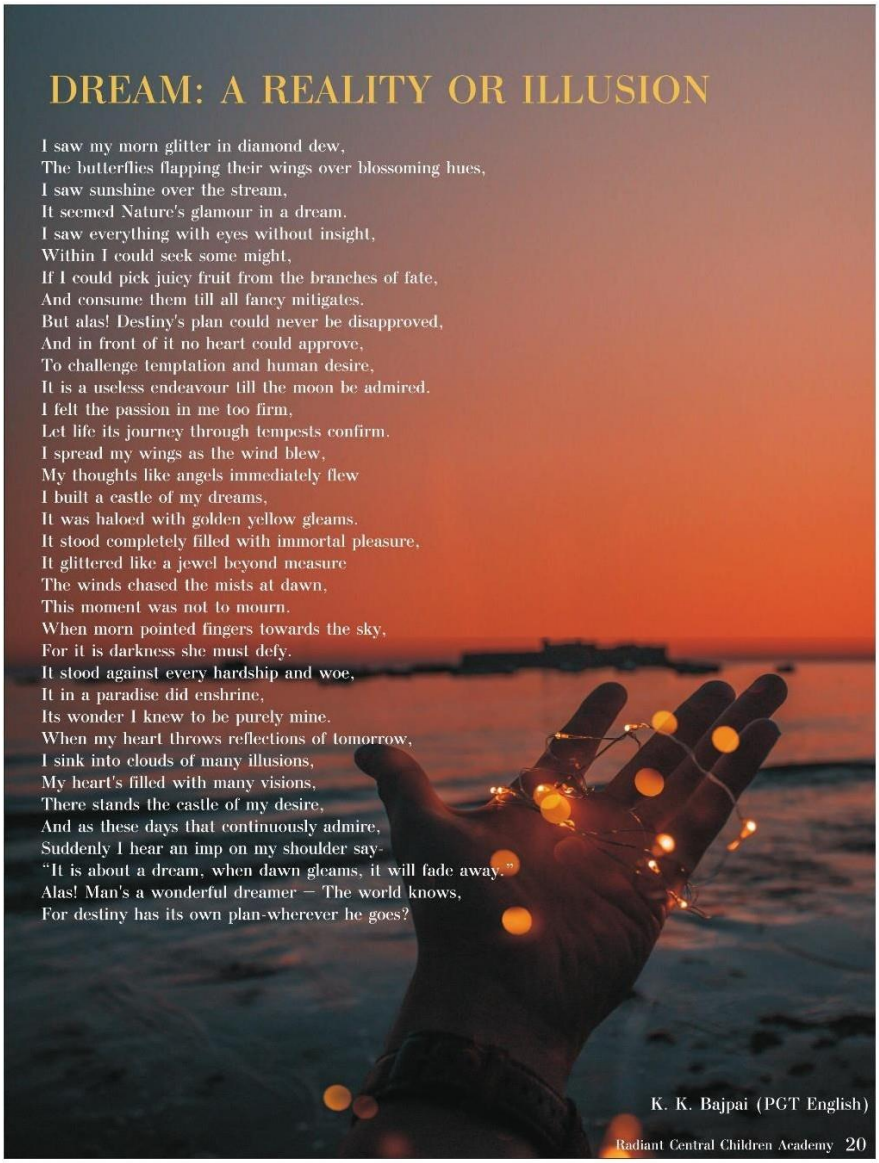

K. K. Bajpai (PGT English)

Old Rhymes in New Times

Nursery rhymes are every child's favorite. Children learn these rhymes with interest and recite them with enthusiasm. It remains fresh even in the minds of grownups. Rhythms have not changed with time rather its contextual meaning and relevance has changed over time.

Jack and Jill don't go to the hill any more to fetch water.

In present scenario, they may go to the 'nal' -the public tap to fetch water for themselves.
So, today rhymes could be-

Jack and Jill went up the nal,
Thinking they'd get some jal,
But the tap was dry.
They sat down to cry,

Humpty Dumpty too doesn't sit on a wall. Where is the time for such leisure activities? Now the Netas sit on the fence to remind us of old rhyme: -

Aya Ram Gaya Ram sat on the wall,
He answered another party's call,
Governor called it defection,
And ordered fresh election,

And so on.....

Nursery rhymes are still recited, but their context has changed.

Deepika Shukla (TGT English)

MY FAVOURITE BOOK

I read lot of books but Marigold is my favourite book. I love this book because it has beautiful poems. My English teacher teaches the poems very nicely. I enjoy singing poems with expression and actions. I want others should also enjoy this book.

Kanha Pankaj (II A)

MY TOOTHPASTE

I use Colgate toothpaste everyday
To keep the disease at bay
Its colour is white and blue
Still looks fresh and new
It keeps my teeth healthy and white
Which makes my day colourful and bright!

Hareem Fatma (II A)

MY SOAP

I take bath with Dettol soap.
Germ free body is my hope.
It has a strong smell.
I like the orange colour of Gel.
It has become my favourite soap.
Not only me but my family' hope.

Aayansh Srivastava (II B)

RELATIVES

Oh! What an irony.
We can choose most of the important things in our life ourselves, from clothes to professions, life style to friends. But we cannot choose something so important in our lives, something we are connected to till we rest in peace forever and that something is 'Relatives'.
Yes, I refer to them as 'something' because they come in all shapes and sizes, defects and abnormalities. If they are few in number I would not complain, but unfortunately you can count them by the dozen, from both the maternal and paternal side.

Some of you may differ from my point of view. But once I tell you about my grand family, you will sympathize with me.. They are all a bit queer in one or the other sense.

For instance, my uncle, who recently came back from Mumbai, has acquired weird dressing sense. Now, you may think that this is normal for someone who stays in Mumbai for quite long time but it seems my uncle is a very fast learner, for he went to Mumbai for not more than a week on a business trip. It might have taken him years to learn how to speak English fluently, but a mere four day's trip to Mumbai changed his personality as far as dressing sense is concerned.
The other example I would like to give is of my dear Aunt Lata. She is the match maker of the family. As you already know that every Indian family has at least one such character. She is the one who is present in every wedding ceremony. She is the one who finds suitable matches for possible brides and grooms. It is as if the burden of matchmaking is bestowed upon her by God and she has to beat some matchmaking record. She prides in the fact that she has successfully paired more than fifteen couples and conveniently ignores the five divorcees.
Then there is Prem uncle, who is jealous of the success of Sanjay uncle, and leaves no stone unturned to put him down. There is Priya aunty, who is the gossip monger in the family.
There are aunties who compare every action of yours with their ideal children and uncles who could start a fist fight while discussing politics.
I guess I have been very pessimistic while describing my relatives. They are weird and funny but not all of them are bad. They are there when you need them, be it to share your joys or to unburden your sorrows.

I guess the phrase, 'Can't live with them, can't live without them,' was coined by someone referring to his relatives.

Saher Mehdi (VIII-B)

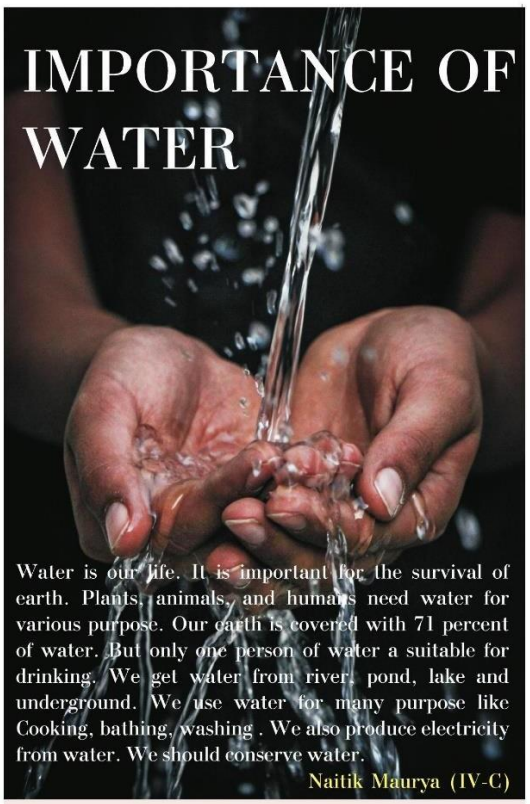

IMPORTANCE OF WATER

Water is our life. It is important for the survival of earth. Plants, animals, and humans need water for various purpose. Our earth is covered with 71 percent of water. But only one person of water a suitable for drinking. We get water from river, pond, lake and underground. We use water for many purpose like Cooking, bathing, washing . We also produce electricity from water. We should conserve water.

Naitik Maurya (IV-C)

MAGGI : IN 2 MINUTES

Mummy-Mummy Bhookh Lagi
Bas two minutes Beta
Every evening at 5:00 PM, me and my mother have this conversation. My mother may be tired of cooking Maggi for me every day but it is not the case with me. I can eat Maggi every day. I love it's flavour so much that I even dream of living on the mountain of Maggi and hope if we could have tree of Maggi which I can grow in my garden.

Anvi (II C)

A PLACE I LIKE TO VISIT

Life is not about sitting at home and let the days pass. It is about gaining knowledge and experience. Many people spend their life in the city were they are born but I am not one among them. I love to travel. I want to experience the nature and the culture throughout the world. My dream is to travel all around the world. The most favourite places which I want to visit are Great Wall of China, Taj Mahal, Eiffel Tower, Statue of Liberty and Disneyland.

Aditya Rudra Pratap Singh (IV-A)

CORONA–A LIFE CHANGER

The COVID-19 pandemic has completely changed our lives. In the last seven months, we have all been staying at home, wearing masks in public places, and trying to stay at least six feet away from other people in order to protect ourselves and the entire community. In the New Year of 2020, everybody in my school was talking about a current epidemic happening in China and how it will eventually spread to the other countries. I never thought that a small epidemic would turn into a pandemic in a matter of weeks. On March 24th, everything changed.

I remember I was in my class with students, when the announcement for lockdown was made. We were scared. The next day, the state announced full lockdown and we all had to quarantine. So many changes had to be made in life in order to keep us all safe. Almost all the public places were closed, with the exceptions of medicine and grocery stores. We were asked to work from home. The worst part was not being able to see friends and family members. I felt angry, sad, hopeless, bored, and trapped.

In order to cope with my emotions, my family and I started to take long walks. I would sing/listen to my favourite songs, read books, watch Ramayana and movies on Disney Plus, Amazon, Hotstar, and Netflix. Everyday life teaches a new lesson, what we're today is the outcome of past. The current state of affairs put the world on pause, but this pause gave me time to reflect on troubling matters. Time that so many others like me probably also desperately needed to heal without even knowing it. Sometimes it takes one's world falling apart for the most beautiful mosaic to be built up from the broken pieces of wreckage.

As the weather got nicer, my family and I started to go out more often to places where it would be safe, such as outdoor restaurants, the park, and the beach. We also purchased a variety of different masks to wear with our clothes for each day.

In the middle of October, the government ordered to open schools in stages. We were happy to see our students after a long time. Everyone was wearing mask, keeping distance and following the rules of sanitization. Though we have overcome the combat of Corona virus but the fight still continues. The last seven months of 2020 have been completely crazy, but at the same time, not everything during the pandemic was completely negative. In the wake of this deadly pandemic, we have found ourselves a voice, a mind and resolved to prioritise health, happiness, realisation of what and who we value the most. We need to be prepared for all the challenges of the future.

Jai Narayan Patel (PGT English)

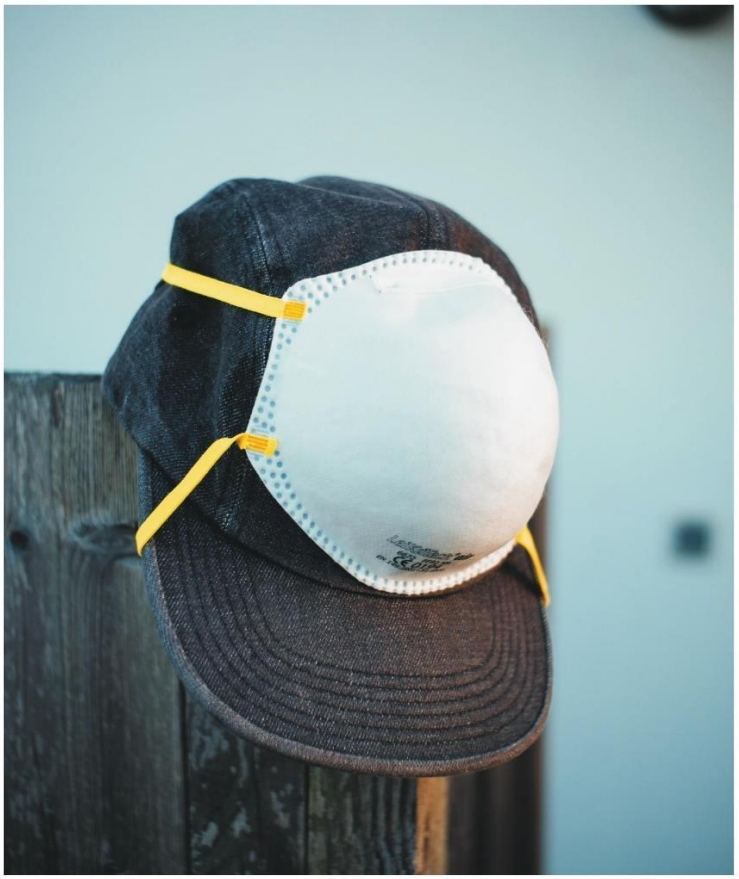

For the time being the most relevant tagline would be
STAY HOPEFUL,
STAY VIGILANT
& STAY SAFE.

Synaptic Pruning is a natural process that occurs in the brain between early childhood and adulthood. During synaptic pruning, the brain eliminates extra synapses. Synapses are brain structures that allow the neurons to transmit an electrical or chemical signal to another neuron.

Synaptic pruning is thought to be the brain's way of removing connections in the brain that are no longer needed.

Researchers have recently learned the brain is more plastic and moldable than previously thought. Synaptic pruning is our body's way of maintaining more efficient brain function as we get older and learn new complex information.

School, teachers and parents must know about this as they play the most vital role in not only training the brain but also for the holistic development of a child.

Early years of life is a period of unique sensitivity during which experience bestows enduring effects. Although this experience based brain plasticity is present throughout one's life, a child's brain is a lot more plastic than a matured one. Brain cell pruning also occurs most rapidly during a child's preschool years. Things can go seriously wrong for children deprived of basic social and emotional nurturing.

Here's an example of synaptic pruning – Let's say a parent consistently shows a child love and care, then the 'love-and-care connections' will develop over time. But if a parent is constantly harsh and punishes the child, then the 'Punishment-and-harsh connections' will be stronger instead. As a result, the child grows up lacking the love and care understanding which is essential to create healthy, meaningful relationships in his future life.

This is why nurturing and positive parenting are so important. Someone has rightly said – "To be in your child's memory tomorrow, you have to be in his life today".

Sangita Sharma (TGT English)

PARENT'S SPEAK

All the support provided by the school during pandemic is highly appreciated, particularly, the response received for queries of children and that too very quickly is highly commendable.
During lockdown when most of the services of the closed, the school was taking care of the education of students. Teachers helped the students in continuing there studies. As parent, I am grateful to teachers and school management .

Viaan Pandey (VII-B)
Ms. Shivangi Pandey (Mother)

My child faced some difficulties to schedule her routine in the beginning but as time passed she was able to plan her studies effectively with the help of teachers. Though the use of mobile phone, I think, is not good but under the present condition there is no alternative available. The school has done a commendable job imparting education to the students.

Astuti Singh (VIII-B)
Ms. Pinki Singh (Mother)

This institution has not only kept itself connected with the students but also has taken care for the all round development via various co-curicular activities using virtual platforms. The parents were also not worried about the studies of their kids as teachers have done there best to frame and deliver content to the students.

Pranjali Yadav (VII-B)
Mr. Biredndra Yadav (Father)

Most private and public institutions have made the change using online platforms such as Zoom, Google classes, Microsoft teams etc. Being a parent of a 4th grader, I think the online visual classes are very promising in this epidemic. Online programs allow our kids of the age group to learn at their own pace, without hindrance, and without compromising on some of their activities. It has brought us education without going anywhere, and it is very flexible. The school had done its best in this field by exploring new teaching and assessment methods. It is time for us Indian parents to understand online educational institutions. This is encouraging but we still face many challenges like internet connectivity and fluctuating power supply.

Aditya Singh (IV-A)
Pratima Singh (Mother)

My daughter Aditi Srivastava study in class 8G of Radiant Central Children Academy. During this session students were taught virtual platforms like Youtube, Google Classroom, Whatsapp etc. Though there was issue of Internet connectivity still the school has tried its best for the students.

The only area, where I feel things would have done more effectively via classroom teaching is grammar. But the good things is students were able to accustom themself with new technology. I appreciate the effort then by teachers and the school management.

Aditi Srivastava (VIII-G)
Mrs. Divya Srivastava (Mother)

PARENT'S SPEAK

कोरोना काल में हमारे रेडिएण्ट कॉलेज के शिक्षक–शिक्षिकाओं ने अपने अथक परिश्रम से हमारे बच्चों को मोबाइल या लैपटॉप के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण कार्य कराने का जो त्वरित निर्णय लिया, उस कारण बच्चों को घर में होकर भी अपने स्कूल में होने का अहसास अत्यन्त रोमांचित करता रहा। अपने अध्यापकों द्वारा प्रेषित प्रत्येक विषय पर छोटे–छोटे वीडियो देखकर बच्चे बहुत प्रसन्न हो जाते थे। बच्चों की समस्याओं को सुनना, उसे हल करना, हमारे बच्चों को प्रेरित करना, नियमित प्रार्थना सभा का हिस्सा बनाना आदि सब निश्चित रूप से विद्यालय के शिक्षकों का सराहनीय प्रयास है।

रानी यादव (7 ए)
ललिता यादव (माता)

छोटा–सा वायरस कोरोना एक वैश्विक बीमारी लेकर आया जिसने संसार को अपना निशाना बनाया। बच्चों का स्कूल आवागमन बंद कर दिया गया जिससे पठन–पाठन में बाधा उत्पन्न हो गई। अन्य स्कूल–कॉलेजों ने अपने–अपने तरीके से बच्चों के लिए ऑनलाइन पढ़ाई की व्यवस्था की। रेडिएण्ट एकेडमी जलालपुर ने भी इस दिशा में बहुत ही सार्थक प्रयास किए। बच्चों के हितार्थ अध्यापकों का प्रयास अत्यन्त सराहनीय रहा। वीडियो लेक्चर एवं सीधे संवाद के तरीके से बच्चों ने पठन–पाठन कार्य को सुरुचिपूर्वक आगे बढ़ाया। इस दौरान इन्टरनेट, मोबाइल की समस्या, सम्पर्क न हो पाना आदि जो भी व्यवधान थे, उन्हें छात्रों व अभिभावकों के उचित सुझाव व विमर्श द्वारा तत्काल हल किया गया। इस कारण सभी छात्रों का शैक्षिक कार्य अबाध गति से संचालित होता रहा।
शौर्य सिंह (8 बी)
ब्रह्म शंकर सिंह (पिता)

कोविड–19 के संक्रमण के फलस्वरूप हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में अनेक बदलाव हुए। बीमारी की व्यापकता के कारण हमारे रहन–सहन, खान–पान, आवागमन तथा सामूहिक जीवनचर्या के प्रभावित होने के साथ–साथ शिक्षा व्यवस्था भी प्रभावित हुई है। लॉकडाउन के कारण समस्त शिक्षण संस्थाएँ बन्द कर दी गई। ऐसी स्थिति में शिक्षकों द्वारा लॉकडाउन के दौरान विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्म का उपयोग कर छात्रों को घर पर ही शिक्षा की व्यवस्था की गई, जो कि एक सराहनीय प्रयास रहा। शिक्षक समुदाय द्वारा यथासंभव न केवल डिजिटल सामग्री बच्चों तक पहुँचाई गई बल्कि उन्हें प्रत्येक विद्यालयी गतिविधि में प्रतिभाग करने के लिए भी प्रेरित किया, ताकि वे शैक्षणिक, गैर–शैक्षणिक कार्यों में अपनी–अपनी प्रतिभा का समुन्नयन कर सकें। इसलिए मैं आप सभी शिक्षकों का हृदय से धन्यवाद अर्पित करता हूँ।
सचिन यादव (7 ए)
अशोक कुमार यादव (पिता)

भाषा भावना के अधीन है। जैसी भावना होती है, उसी तरह भाषा का वेग होता है। महामारी से ग्रस्त वैश्विक जगत में जब सभी व्यवस्थाएँ डगमगा रही थीं, तो रेडिएण्ट एकेडमी ने अपने सभी संसाधनों एवं नेटवर्किंग का प्रयोग करते हुए शिक्षण अधिगम कार्यकलापों को गतिमान रखा। ऑनलाइन बच्चों की उपस्थिति से लेकर गृहकार्य देने तक का कार्य शिक्षकों ने बखूबी निभाया। उस लम्बे अन्तराल में बच्चे शायद भूल भी सकते थे कि उन्होंने पिछले वर्ष कहाँ तक अध्ययन किया है। परन्तु इस एकेडमी ने आधुनिकतम संसाधनों का सदुपयोग करते हुए बच्चों को सीखने में व्यस्त रखा। इसलिए यह संस्था सर्वथा प्रशंसा की पात्र है। मेरे परिवार के नई पीढ़ी के सभी सदस्य इस संस्था से लाभान्वित हो चुके हैं। वर्तमान में श्रेया मिश्रा–8 बी एवं समीर मिश्रा–5 ए अध्ययनरत हैं। जो हमारे लिए समस्त विद्यालयी गतिविधियों की जानकारी के स्रोत हैं।

श्रेया मिश्रा (8 बी) एवं समीर मिश्रा (5 ए)
सुरेन्द्र कुमार मिश्र (पिता)

मेरा नाम दीपा श्रीवास्तव है। मेरी बेटी अनवेशिका श्रीवास्तव कक्षा–6 डी में पढ़ती है। मैं बताना चाहूँगी कि इस वर्ष कोविड–19 के दौरान जो डर व उथल–पुथल का माहौल था, उस कारण सभी माता–पिता अपने बच्चों की पढ़ाई को लेकर चिंतित थे। तब उस भयावह स्थिति में भी रेडिएण्ट एकेडमी ने बिना एक दिन गवाएँ हमारे बच्चों की शिक्षा हेतु निरन्तर प्रयासरत रहा। बच्चों को बहुत मनोरंजकपूर्ण तरीके से गूगल क्लासरूम में लेक्चर, लेसन नोट्स, गृहकार्य आदि भेजे गए। बच्चों के लिए यह एक नया अनुभव था। वे हर दिन गूगल क्लास में उपस्थिति लगाकर वीडियो का इन्तजार करते, शिक्षकों द्वारा अन्य निर्दिष्ट कार्यों को पूरा करते। बच्चों को खुशी यह थी कि यह सब उन्हें घर बैठे उपलब्ध हो रहा है। मुझे खुशी इस बात की है कि इस संक्रमण काल में भी विद्यालय की भूमिका अत्यन्त सराहनीय रही।

अनवेशिका श्रीवास्तव (6 डी)
दीपा श्रीवास्तव (माता)

ANNUAL REPORT 2020-21

Circumstances become a problem when the mind is weak; when the mind is stable, circumstances become a challenge, but when it's strong, it become an opportunity.

The Academic Session 2020-21 underwent lots of challenges. At the time when the initiatives of dynamic human beings sound to be at halt, it seemed that the proper flow of education would also come to a standstill, but rational human behavior and innovative approaches paves ways to counter situation for spontaneity of education.

Through online education, teachers and students could interact with each other and continue the teaching-learning in process. In the frightening environment of Covid-19, we faced many challenges, but the commitment helped us to tackle situation.

The major achievements of the academic session 2020-21 can roughly be categorized into Academic and Co-scholastic.

The results of the 10th and 12th board exams were as expected. Like previous years, this year also the best result in the district Ambedkarnagar went in the name of Radiant Central Children Academy Jalalpur-Ambedkar Nagar. In class 12 Harshit Bajoria with 98% in Commerce stream and Rishabh Gupta 97% in Science

stream brought laurels, while Anshum Patel held the school flag high, scoring 97.6% in class 10.
In the same year, Rishabh Gupta, Jai Yadav, Mrityunjay Singh and Harsh Kashyap add feather in the school cap by qualifying in JEE-Advanced in their very first attempt.

At a time when teaching and delivering proper study material to the students seemed to be very difficult we initiated teaching on Whatsapp, sharing study material and worksheets in pdf followed by video lectures prepared by the teachers, links of Youtube and worksheets through Google Classroom. To address problem of students, online live classes were also inducted in addition to remedial classes. Demonstration of Lab activity and practical were also shared with the students to facilitate them on how to perform practical when they would get opportunity to perform in Labs. To monitor and assess the effectiveness on the online classes and test students preparedness, periodic test were also conducted regularly via Google Form.

Teachers would liase with students and parents to establish close connection with them and get regular feedback about progress of the work of the students. Teacher were available round the clock to address the queries and solve the problems of students.

Half-yearly examinations were conducted in the school in an offline mode. Students participated in exam from their homes under supervision of their parents. This proved to be very fruitful to sustain the Academic interest of students.
Apart from teaching, co-curricular activities were also observed online concurrently. Students were given opportunities to participate in Inter House Competitions viz debate, speech, quiz, essay, story telling and poem recitation.

Additionally, Online Morning Assembly, Physical Activities, Celebrations viz Teacher's day, Republic day, Christmas were also observed in which students participated with fervour and enthusiasm.

To promote reading skill and creativity among the students, e-books were also made available online via e-library. Students not only wrote book review but also shared their presentation with teachers.

Empowered teachers play a key role in making the school vibrant. Hence teachers were offered opportunities to get online training from CBSE and other available platforms in addition to in house training both online and offline on various areas i.e. online teaching, recording video lessons, editing videos, preparing documents, creating online test by google form and online conferencing on Google Meet and Zoom App.

In nutshell I can say that with concerted effort of teachers and due support from parents, students remain connected with their teachers and felt as if they were in school usual.
I would like extend my heartfelt gratitute to all my teachers for there incessant effort to combat the challenge thus converting it into opportunities.

I am very thankfull to School Administration and Management for whole hearted support in this difficult time. I am inducted to our Director and Academic Advisor Dr. P. S. Salaria for their valuable guidance and support that help us to keep the wheel moving.

Akhilesh Shukla (Principal)

मनाली का सफर

वह मेरे लिए सबसे खूबसूरत पल था, जब मैं दिल्ली अपने बड़े ताऊ जी के यहाँ गई हुई थी और मुझे पता चला कि हम मनाली जाने वाले हैं। मैं जाने के लिए बहुत उत्सुक थी। मुझे पर्वतीय क्षेत्र अत्यन्त पसंद है क्योंकि पहाड़ों में बर्फबारी मन मोह लेता है। अगले दिन मैं मनाली जाने की तैयारियों में लगी रही। हम सब सुबह यहाँ से 2050 मीटर की ऊँचाई पर बसे हिमाचल प्रदेश के शहर मनाली के लिए रवाना हुए। हम साँप जैसी लहराती सड़कों से गुजर रहे थे। रास्ते में पहाड़ों से लेकर जितने भी घर दिखाई दे रहे थे उन सबमें सेब के पेड़ जरूर लगे थे। हमने थोड़ा ठहरकर सड़क किनारे लगी सेब की दूकानों से ताजे रसीले सेब खरीदे और आगे बढ़ गए। अपनी कार से लगभग 4 घंटे चलने के बाद हम अपने गंतव्य स्थल मनाली पहुँच गए थे। यहाँ के एक रिजॉर्ट में थोड़ा विश्राम करने के बाद सीधे मनु मंदिर पहुँचे। यह महर्षि मनु को समर्पित है। यह समूचा मंदिर देवदार और अन्य वृक्षों से घिरा हुआ है। यहाँ हमने सुन्दर नक्कासी और देवताओं की मूर्तियाँ देखीं। इसकी संरचना लकड़ी और कंकरीट से बनी हुई है। यहाँ से बाहर निकलकर एक रेस्तरा में स्वादिष्ट भोजन का लुत्फ उठाया। इसके बाद हम सभी हिडिम्बा देवी मंदिर पहुँचे। महाभारत में भीम की पत्नी का नाम हिडिम्बा था। बहुत ऊँचे–ऊँचे पेड़ों के बीच स्थित यह एक भव्य मंदिर है। यहाँ से हम मनीकरण गुरुद्वारे गए, भजन–कीर्तन में हिस्सा लिया और लंगर का प्रसाद चखकर वापस अपने रिजॉर्ट आ गए। अगले दिन हम सभी एडवेन्चर कैम्प में शामिल हुए। मैंने डर–डर कर रस्सी के सहारे नदी पार करना सीखा, इसके अलावा नेट पर चढ़ना, रोपवे और रॉपिटंग आदि भी सीखने की कोशिश की। यह कैम्प मुझे पिछले वर्ष मेरे स्कूल में हुए समर कैम्प की याद दिला रहा था। हमने यहाँ बहुत मौज–मस्ती की। शाम तक हम सभी बहुत थक चुके थे, इसलिए वापस रिजॉर्ट आकर खाना खाकर सो गए। अगले दिन जब हम वापस आ रहे थे तो अचानक एक विस्फोट हुआ ऐसा लगा मानो बादल फट गया हो, बाद में पता चला कि रास्ता बनाने के लिए पत्थरों को तोड़ा जा रहा है। खैर, थोड़े से इंतजार के बाद हम आगे बढ़े। घर वापस आकर इतना वक्त बीत जाने के बाद भी वहाँ की स्मृतियाँ अभी ताजा हैं। वहाँ के हरे–भरे सेब के बाग, सागौन, देवदार के ऊँचे–ऊँचे पेड़, बर्फ से ढ़के पहाड़ और नदियों का तेज बहाव, मंदिरों के पत्थरों पर सुन्दर नक्काशी तथा वहाँ के लोगों का मधुर व्यवहार हम कभी नहीं भूल सकते।

साक्षी वर्मा (X-H)

एक सैर कुशीनगर की

नवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा के बाद मैं अपने परिवार के साथ शान्ति के प्रतीक शहर कुशीनगर की यात्रा पर गया। कुशीनगर गोरखपुर जनपद से 50 किमी. पूर्व दिशा में राष्ट्रीय राजमार्ग 28 पर स्थित एक छोटा–सा शहर है। यह शहर इसलिए प्रसिद्ध है क्योंकि बौद्ध धर्म के संस्थापक और पूरे विश्व में शान्ति और अहिंसा चाहने वाले महात्मा गौतम बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली है। महात्मा बुद्ध ने अपनी अंतिम साँस कुशीनगर में ही ली थी।

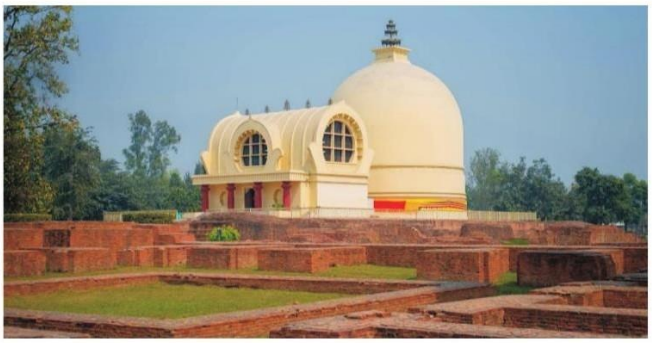

कुशीनगर का प्रवेश द्वार बहुत ही बड़ा है। हम लोग प्रवेश द्वार देखने के बाद सबसे पहले "चाइना बुद्धिस्ट टेम्पल" देखने गये। यह टेम्पल अनुभवी इंजीनियरों द्वारा बनाया गया है। जिसमें सीढ़ियों के दोनों तरफ ड्रेगन का भी चित्र बना है जो देखने में बिल्कुल असली लगता है। इसके बाद हम लोग कुशीनगर के प्रसिद्ध शिव मन्दिर "गोल्डेन टेम्पल" और "श्रीलंकन टेम्पल" देखने गये। श्रीलंकन टेम्पल एक बड़े से तालाब के बीच में स्थित है, जिसकी सुंदरता अद्वितीय है।

यहाँ से हम लोग कुशीनगर पार्क व परिनिर्वाण स्तूप पहुँचे। पार्क में हमने विविध प्रकार के रंग–बिरंगे पक्षी तथा फूलों को देखा। आगे बढ़ते ही भगवान बुद्ध की 6.1 मीटर ऊँची मूर्ति लेटी हुई मुद्रा में नजर आई। इसे देखते ही हम सभी रोमांचित हो उठे। यहाँ के आसपास के पत्थरों में उत्कीर्ण बुद्ध के उपदेश हमें बार–बार पढ़ने को बाध्य कर रहे थे। यह समूचा विहार खण्डहरो के विशाल ऊँचे चबूतरे पर खड़ा है। इसी के पीछे एक चौकोर 40 फीट ऊँचा स्तूप है। जिसके चारों तरफ हमने ध्यानमग्न बौद्ध भिक्षुओं को देखा। हमने यहाँ वक्त बिताकर अद्भुत शांति का एहसास किया। इसी रास्ते आगे चलने पर हमने बर्मी, बुद्ध विहार, चीनी बुद्ध विहार व श्रीलंकाई बौद्ध विहार के भव्य मंदिरों को देखा। इन सभी मंदिरों में बुद्ध की अलग–अलग धातुओं की प्रकाश की साज–सज्जा के साथ छोटी–छोटी अनगिनत मूर्तियों के दर्शन किए। यहीं के जापान बौद्ध विहार में बुद्ध की अष्टधातु की मूर्ति स्थापित है। इस स्थल का निर्माण कार्य कई देशों के सहयोग से जान पड़ता है।

आगे बढ़ने पर हमें एक प्राचीन संग्रहालय के बारे में पता चला। वहाँ पहुँचकर हमें हजारों वर्ष पुरानी मूर्तियाँ, कलाकृतियाँ, मिट्टी के बर्तन, उस समय की मुद्राएँ आदि व्यवस्थित रूप से रखी हुई मिलीं जो कि उत्कृष्ट कारीगरी का नमूना पेश कर रही थीं। हम यह सब देखकर अभिभूत थे। आखिरकार इस अल्प समय में लग रहा था कि बहुत कुछ देखना शेष है और यही हुआ भी। मुझे आज भी लगता है कि इस पुण्य भूमि के दर्शन करने दोबारा अवश्य जाना होगा।

विवेक कुमार चौरसिया (X-I)

वैज्ञानिक दृष्टिकोण समय की माँग है

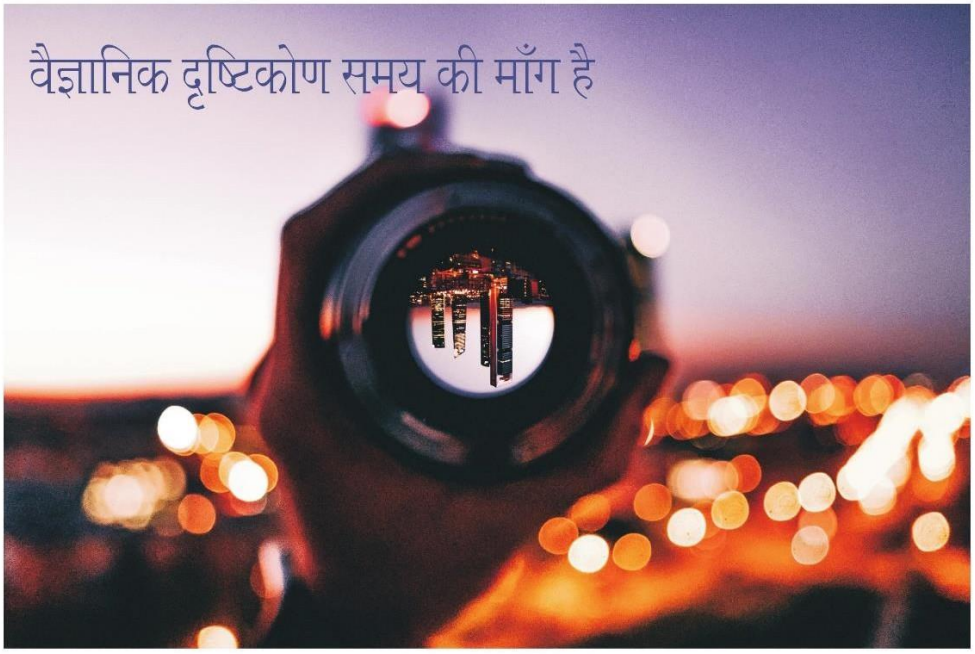

प्रस्तुत कथन का अभिप्राय यह है कि आज मात्र वैज्ञानिक उपलब्धि पर सारा ध्यान केन्द्रित करने की अपेक्षा इस बात की अधिक आवश्यकता है कि वैज्ञानिक मानसिकता के निर्माण, विकास, प्रोत्साहन एवं अंगीकरण में अधिक रुचि ली जाए। इसकी शुरूआत हमें शैक्षिक संस्थानों से करनी चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का सम्बन्ध मनुष्य के अन्तर्जगत से है। वर्तमान में इसी अभाव के कारण सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का ह्रास देखने को मिल रहा है।

वर्तमान में यद्यपि मनुष्य ने खूब तरक्की की है। उसने प्रकृति के अनेको रहस्यों को सुलझाया है। भौगोलिक दूरियाँ कम हुई हैं। संचार–व्यवस्था में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। औषधियों के द्वारा तमाम जानलेवा बीमारियों पर काबू पा लिया गया है। फिर भी क्यों सम्पूर्ण मानवता अपने को भयभीत एवं त्रस्त महसूस करती है? ऐसा इसलिए क्योंकि हमने वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रेरित नैतिक प्रगति को दरकिनार किया तथा सिर्फ वैज्ञानिक आविष्कार आधारित भौतिक प्रगति पर ही अपना सारा ध्यान केंद्रित रखा जो कि अत्यन्त सोचनीय है।

विज्ञान मात्र तथ्यों को मुँह जबानी याद करने का विषय नहीं है। यह मनुष्य के मन–मस्तिष्क में व्याप्त अंधकार को दूर करने के लिए प्रकाश की तरह है। विज्ञान के छात्र का विश्लेषणात्मक मस्तिष्क होना चाहिए। परीक्षणों के माध्यम से साक्ष्य जुटाने का परिश्रम करना चाहिए। प्रकृति की हर घटना के पीछे क्या कारण है? यह जानने का बार–बार प्रयास करना चाहिए। यदि एक विद्यार्थी सभी कथनों को रट ले और लिखित बातों का कोई विश्लेषण ही न करे तो नए अनुसंधान कैसे होंगे? कोई भी ज्ञान तब तक अपने उद्देश्य में असफल होता है, जब तक वह दैनिक व्यवहार से संबंधित न हो। यदि कोई विद्यार्थी जंक फूड से होने वाली हानियों के विषय में जानता तो हो परन्तु उसके भोजन में फिर भी 80 प्रतिशत जंक फूड ही हो तो ऐसे ज्ञान का क्या लाभ? आइंसटीन के अनुसार– बीते हुए कल से सीखो, आज के लिए जिएँ, आने वाले कल के लिए आशान्वित रहें। महत्वपूर्ण यह है कि प्रश्न करना न रोकें, जिज्ञासु बने रहें। परन्तु देखने में यह आता है कि हम विज्ञान की सकारात्मक भावनाओं को अपनाने में रुचि नहीं दिखाते लेकिन वैज्ञानिक परिणामों के उपभोग में सबसे आगे रहना चाहते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमें जीवन के हर मोड़ पर एक सही दिशा प्रदान करता है। विज्ञान ने हमें सृजन से लेकर विनाश तक हर प्रकार की शक्ति दी है। वस्तुतः आवश्यकता इस बात की है कि हम बदलते परिदृष्य में आधुनिक सुविधाओं का दोहन तो करें परन्तु आने वाली पीढ़ी के लिए निरन्तर मौलिक अनुसंधान भी करें।

अमाहिरा (IX-A)

प्रकृति के संग

रंग–बिरंगी दुनिया देखो,
कितने रंग निराले।
इन्द्रधनुष की आभा देखो,
शशि, भानु–नक्षत्र हमारे।
रिमझिम बारिश काले बादल,
वसुधा को रहे सँवारे।
रंग–बिरंगे फूलों की खुशबू,
मन में भरते मस्ती के झोंके।

श्वेत हिम पर्वत को देखो,
अविचल सीना ताने ठाढे।
सागर की उत्ताल तरंगे,
भू के पैर पखारे।
रंग–बिरंगी तितली देखो,
मन मेरा मचला जाए।
इन रंगों को जीवन में उतारें,
आओ, मिलकर गीत ये गाएँ ।

अदित्रि श्रीवास्तव (VII-G)

यदि प्रकृति में रंग नहीं होते ?

एक छोटे से शब्द प्रकृति में कितना कुछ समाया है, कोई सोच भी नहीं सकता। प्रकृति के अन्दर वायु, जल, मिट्टी, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, मानव, नदियाँ, तालाब, झरनें, पहाड़, खनिज आदि और न जाने कितने प्राकृतिक संसाधन आते हैं। इन सभी चीजों से हमें शुद्ध हवा, पानी, भोजन आदि जो जीवन के लिए नितान्त आवश्यक है।

प्रकृति से हमें जीवन जीने की उमंग मिलती है। बसंत को देखकर दिल मग्न हो जाता है। सावन में रिमझिम बरसात मन को मोह लेती है। इंद्रधनुष हमारे अंतरंग में रंगीन सपने सजाता है। सूर्य की पहली किरण को लेकर जंगल और पहाड़ों तक नदी की मधुर आवाज़ तथा पक्षियों के चहचहाहट जो हमारे आसपास उपलब्ध हैं, ये सभी जीवन के रंग होते हैं। जब हम प्रकृति की खुली वादियों को देखते हैं, जहाँ चारों ओर हरा–भरा, रंग–बिरंगा दृश्य होता है। ऐसा दृश्य देखकर मन खुश हो उठता है, दिल नाचने को कहता है। परन्तु विस्मय की बात यह है कि यदि प्रकृति में ये रंग नहीं होते तो प्रकृति का दृश्य कैसा होता? जो हरी–भरी, निराली प्रकृति लगती है, वह प्रदूषण के कारण मरुस्थल की भाँति हो जाती, धरती पर सभी जीवों का जीवन संकट में पड़ जाता। हमें किसी भी प्रकार का कोई सुख नहीं मिल पाता। इसलिए प्रकृति के इन विविध रूपों को बचाने का प्रयास करना हम सभी का उत्तरदायित्व है।

अभिषेक यादव (X-B)

मैं एक मोबाइल हूँ

जी हाँ, मैं एक मोबाइल फोन हूँ
आजकल मैं आप सब की जरूरत हूँ
मैं आपको इंटरनेट द्वारा किसी भी
प्रकार की जानकारी देता हूँ।
मेरे द्वारा आप सेल्फी ले सकते हैं
दुनिया के किसी भी कोने के
व्यक्ति से बातचीत कर सकते हैं।
वीडियोकाल कर सकते हैं।
संसार की घटनाओं की जानकारी रख सकते हैं।
मेरे द्वारा अपनी कविता, कहानी व लेखों
को प्रकाशित कर सकते हैं।
फेसबुक पर ढेरों दोस्त बना सकते हैं।
पर कुछ लोग मेरा दुरुपयोग भी करते हैं।
जिस कारण मैं कई गंभीर बीमारियों
का कारण बन सकता हूँ।
जैसे–शरीर में दर्द, नीद नहीं आना,
आँखों में दर्द, तनाव आदि।
अतः मैं निवेदन करता हूँ कि मेरा प्रयोग
आवश्यकता पड़ने पर ही करें।
छोटे बच्चों को मुझसे दूर ही रखें।

कुलदीप (XI-F)

उठो, देर न करो

बहुत से काम पड़े हैं उठो, देर न करो।
नसीब द्वारे खड़ा है उठो, देर न करो।
जिन्होंने देर कभी की है काम करने में,
बड़ी मुश्किल में पड़े हैं उठो, देर न करो।
समाज खुश रहे और खुश रहे भगवान उनका,
अपनी मेहनत पर अड़े हैं उठो, देर न करो।
आज लहरा रहा संसार में परचम उनका,
जो मुश्किल से लड़े हैं उठो, देर न करो।
जीवन की डगर इतनी आसान भी नही है,
रास्ता तुमको ही बनाना है उठो, देर न करो।
जो कहते हैं जब जागो तभी सवेरा,
झूठी देते दिलासा हैं उठो, देर न करो।
वक्त से चलो, वक्त तुम्हे थाम लेगा,
मंजिल पर पहुँचना है उठो, देर न करो।

हिमांशु उपाध्याय (VIII-A)

आगे बढ़ना ही जिंदगी है

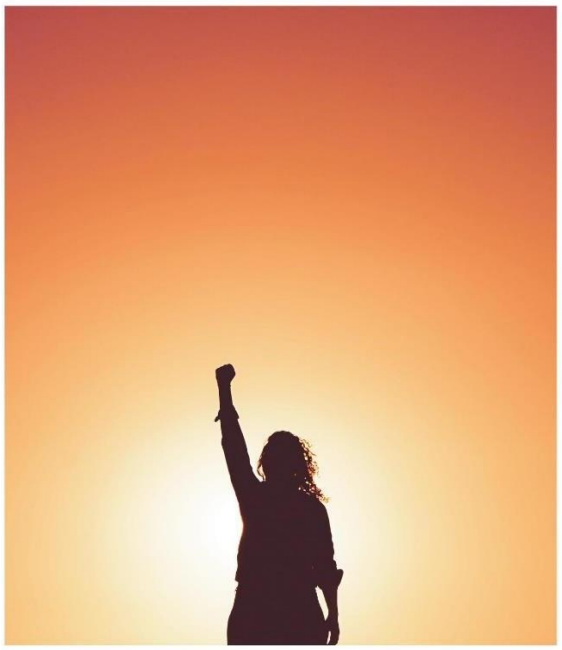

"जिन्दगी कितनी भी जटिल हो हमें सपनों को नहीं खोना चाहिए।"

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई ऐसा दिन जरूर आता है जो उसके जीवन को पूरी तरह से बदल देता है। जीवन की यह दर्दनाक घटना मैं कभी नहीं भूल सकती। एक दिन दोपहर को मैं अपने कमरे में आराम कर रही थी कि तभी मेरी माँ आकर कहती है कि तुम्हारे पिताजी मोटर साइकिल से गिरकर घायल हो गए हैं, उन्हें अस्पताल ले जाया गया है। मैं तुरन्त ही अपने पिताजी के पास फोन करने लगी, पर उनका फोन कोई उठा ही नहीं रहा था। फिर थोड़ी देर बाद उनका फोन पुलिस उठाती है पर वह हमें कुछ साफ–साफ नहीं बताती। मेरी माता जी भगवान की मूर्ति के पास जाकर रो–रो कर प्रार्थना करने लगीं। फिर हम सब भी अस्पताल जाते हैं तब भी हमें कुछ पता नहीं रहता है कि कैसे हैं वो। पूरा दिन बीत जाता है। हम सब घर आते हैं तब वहाँ हमें पता चलता है कि पिता जी की मृत्यु हो गई है। यह सुनकर मेरे आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। उनको बार–बार याद करके मैं रोए जा रही थी। उनके साथ बीते पल बार–बार मुझे याद आ रहे थे। उस वक्त मुझे यह महसूस हुआ जैसे कि सिर्फ मुझे छोड़कर और सब कुछ उनके साथ चला गया हो क्योंकि शायद मुझे यह पता था कि मैं अब दुबारा उन्हें नहीं देख सकती हूँ। जब मेरे पिता की अन्तिम संस्कार की सारी तैयारियाँ होने लगी तो उस समय मैं सदमें में थी। चारों तरफ मुझे चिल्लाने और रोने की आवाज सुनाई दे रही थी। उसी समय मैं अपने अगल–बगल देखती हूँ, तब मुझे यह ज्ञात होता है कि मेरी तरह सबको महसूस हो रहा है। मैं अपनी आँखे बंद करती हूँ और यही सोच रही थी कि कोई आकर मुझसे कहे कि यह एक बुरा सपना है, पर यह तो सच्चाई थी। मैं बाहर से ठीक दिखाई दे रही थी परन्तु अंदर ही अंदर यह लग रहा था कि जैसे मैं घुट रही हूँ। जब मेरे पिताजी के मृत शरीर को अंतिम संस्कार के लिए ले जाया जा रहा था, तब उस समय मैं बहुत तेजी से चिल्लाई और मुझे यह ज्ञात हो जाता है कि वह हमेशा के लिए चले गये हैं।

मैंने अपने पिताजी को जरूर खो दिया पर मैंने वह सपना नहीं खोया जो पिताजी मेरी आँखों से देखते थे। वह आज भी मेरे मार्गदर्शक हैं। मैं आज निराश नहीं हूँ मैं जानती हूँ कि मुझे अपनी कमजोरियों पर काबू पाना है। मैं आज भी अपने पापा की लाडली बेटी हूँ। जिसे अपने पापा के आदर्शों पर चलकर आगे बढ़ना है। उन्होंने मुझे यही सिखाया है कि आगे बढ़ना ही जिन्दगी है।

अंजली उपाध्याय (XI-D)

कोरोना, कोरोना
इतना भी परेशान करो ना

यहाँ परेशानी से तात्पर्य है लॉकडाउन अर्थात घर में बंद रहना। अब तो घर में इतना रह लिया है कि साइकिल में भी जंग लग गई है। लोग स्टेटस लगाते हैं और फोटो अपलोड करते हैं – 'चॉकलेट केक मेड बाई मी' 'चॉको बॉल्स मेड बाई मी' इत्यादि। मुझे समझ नहीं आता इन लोगों को समय कैसे मिलता है, मुझे तो विद्यालय से मिलने वाले गृहकार्य करने से छुट्टी ही नहीं मिलती थी। ऊपर से जहाँ जाओ मास्क का प्रयोग करो। अगर मास्क नहीं.... तो चालान सही। पैसे देने से तो अच्छा है कि मास्क के अंदर आधा पौना साँस ही ले ले। इन छः–सात महीनों में एक परेशानी यह थी कि इतनी लंबी अवधि में घर के वही दस लोग और स्कूल से आने वाले गृहकार्य के साथ समय बिताना। ऐसा लग रहा था 2017 का नोटबंदी 2020 के घरबंदी में परिवर्तित हो गया था। ऊपर से कोरोना महाराज तो अपना कहर ढ़ाने में पीछे नहीं थे, दिन–प्रतिदिन भटूरे के जैसे फलते–फूलते जा रहे थे। तालाबन्दी, सैनेटाइजर लगा–लगाकर हाथ छिल गए। हर सुबह जब टी.वी. खोलो आप अच्छे मूड में भी हो तो समाचार चैनल वाले ऐसी खबरें सुनाएँगे कि आपको लगेगा कोरोना बैंड बाजा बारात लेकर बाहर खड़ा है, अभी चार कंधों पर अर्थी उठेगी। अब सुबह देर से उठने का सुख भी नहीं रह गया था। सुबह सात बजे उठे और उपस्थिति लगाएँ। न दोस्त न सहपाठी, सिर्फ फोन और गूगल क्लासरूम।

एक दूसरी समस्या यह जहाँ छुट्टियों में हम नानी के घर जाते थे, अन्य दूसरी जगहों जाते थे किन्तु इस बार हम कहीं बाहर नहीं जा पाये। सात महीनों में एक भी बार होटल पार्क की शक्ल तक न देखी। न किसी के जन्मदिन पर केक आया, न दोस्त आए। रिश्तेदारी में जितने शादी–विवाह हुए सब फीके गए। अनेक अवसर पर तो बुलाया नहीं गया और कुछ में घर के सिर्फ दो सदस्य आने को कहा गया। महामारी के आने के प्रारम्भ में लोग कहते थे कि एक महीने की महामारी है, फिर कहा गर्मी में खत्म हो जाएगा, उसके बाद ज्योतिष विद्या से पता चला कि जुलाई के अंत में खत्म हो जाएगा। परन्तु हर बार हम मासूम बच्चों की खुशी पर पानी फिरता रहा। प्रत्येक दिन अनेक लोग मर रहे हैं अनेक संक्रमित हो रहे हैं। मन तो करता है कि कोरोना का गला दबा दें, पर फिर डर लगता है कि कहीं मेरे गले में घुस गया तो बम–ब्लास्ट कर देगा। हम बच्चे मानसिक पीड़ा के दौर से गुजर रहे थे, पर सोच रहे थे कि कभी तो स्कूल खुलेगा ही।

सलोनी गोयल (X-A)

आत्मनिर्भर भारत

"दूसरे पर निर्भर रहकर व्यक्ति अपने जीवन के सुखों का वास्तविक उपभोग नहीं कर सकता ।"

आत्मनिर्भर का अर्थ है–अपने किसी भी जरूरत के लिए किसी अन्य पर निर्भर न होकर सिर्फ खुद पर निर्भर होना। यह एक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण है, जिसमें हम भारतीय अपने ही देश में विनिर्माण के क्षेत्र में अपनी–अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति अपने देश की माँग के अनुरूप अपने ही लोगों द्वारा अपने ही संसाधनों का उपयोग करके विश्व कल्याण की दिशा में अग्रणी भूमिका निभाएँगे। आज जापान, अमेरिका, रूस, चीन, इजराइल जैसे देश इसी कारण हमसे आगे हैं। इसलिए आत्मनिर्भर बनना वर्तमान की जरूरत है। आत्मनिर्भरता सिर्फ आत्मबल और आत्मविश्वास से ही संभव है। आत्मनिर्भरता, ग्लोबल सप्लाई चेन में कड़ी स्पर्धा के लिए भी देश को तैयार करती है। आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास को बढ़ाने में भी सहायक होती है, जिसके कारण सफलता की राह आसान हो जाती है। आज विश्व में आत्मनिर्भरता के मामले पूरी तरह से बदल गए हैं। भारत की संस्कृति और संस्कार उस आत्मनिर्भरता की बात करते हैं जिसकी आत्मा "वसुधैव कुटुम्बकम्" है। भारत की आत्मनिर्भरता में संसार के सुख, सहयोग और शांति की चिंता

होती है। भारत की प्रगति में हमेशा विश्व की प्रगति समाहित रही है। भारत के लक्ष्यों और कार्यों का प्रभाव विश्व पर जरूर पड़ता है। आत्मनिर्भर का मतलब यह नहीं है कि हम किसी देश के सामान का आयात बंद कर दें। इसका मतलब यह है कि हमारा खुद का माल इतना सस्ता और अच्छा हो कि विदेशी सामान को छोड़कर लोग इसे ही खरीदें। यहाँ भारत में अभी तक कुछ शीर्ष आयातित उत्पाद हैं जो कि भारी मात्रा में आयात किए जाते हैं : तेल, कीमती पत्थर, इलेक्ट्रानिक्स, भारी मशीनरी, जैविक रसायन, प्लास्टिक, वनस्पति तेल, हथियार, लोहा, इस्पात आदि। अगर भारत आत्मनिर्भर बनेगा तो इन सब उत्पादों को आयात करने का खर्च बचा सकता है।

आत्मनिर्भरता का मतलब देश और दुनिया में गिड़गिड़ा कर अपना माल बेचना नहीं है। इसका मतलब है कि अपनी क्वालिटी और ब्राडिंग इस स्तर की करनी है कि लोग अपनी पसन्द से उसे खरीदें। आत्मनिर्भरता का मजाक उड़ाना स्वयं अपने वजूद का मजाक उड़ाना है। आत्मनिर्भर भारत की भव्य इमारत 5 खंभों – इकोनॉमी, इंफ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजी, ड्राइवेन व्यवस्था, वाईब्रेट डेमोग्राफी व डिमांड पर खड़ी है। डिमांड बढ़ाने और इसे पूरा करने के लिए सप्लाई चेन के हर स्टाक होल्डर्स को सशक्त होना जरूरी है साथ ही प्रत्येक के श्रम का सम्मान देना भी उतना ही जरूरी है। काम न करने व जो है सो ठीक है, की आदत का त्याग करना चाहिए।

आत्मनिर्भर होने से हमारे देश को अनेकों लाभ हैं। पहला लाभ तो आयात में कमी और निर्यात में वृद्धि होगी। जिससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था में सुधार होगा। दूसरा, अन्य देशों से व्यापार के साथ– साथ मित्रता भी बढ़ेगी। तीसरा, इससे पूरे विश्व में एक भाईचारे का संदेश जाएगा। इसके अलावा हमें बड़ी–बड़ी मशीनें, कच्चा माल, कलपुर्जे आदि खरीदने की जरूरत नहीं होगी। दुनिया में एक नई पहचान बढ़ेगी, देश में ही निवेश बढ़ेगा, बेरोजगारी–भुखमरी का नामोनिशान मिटेगा, डालर के मुकाबले रूपया मजबूत होगा, लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा आदि। देश को आत्मनिर्भर बनाने में अनेक समस्याएँ भी हैं। जैसे कि ''कुशल भारत–कौशल भारत'' योजना के अन्तर्गत मजदूरों, नव–युवकों के उत्तम प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। इसे और अधिक व्यापक बनाया जाए। महिलाओं के शिक्षण–प्रशिक्षण की विशेष कार्य–योजना बनाई जाए। हर क्षेत्र में सुरक्षा व कानूनी बाधाओं को दूर किया जाए। देश के उज्ज्वल भविष्य को बचपन से ही किसी विशेष क्षेत्र में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। जिससे उन्हें अपने भविष्य की चिंता न हो, वे अपनी रुचि व प्रशिक्षण से प्रतिभा को निखार सकें। प्रत्येक जिले में व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना हो। शहर और गाँव की कनेक्टीविटी को बढ़ाया जाए। ऐसी व्यवस्था हो जिसमें शहरों में निर्मित उत्पादों का कच्चा माल गाँवों से ही अधिकांशतः प्राप्त हो सके तथा बैंकिक प्रणाली को मजबूत किया जाए। आत्मनिर्भर बनने की शुरूआत हो चुकी है। यही कारण है कि वर्ष 2020–21 की पहली छमाही तक एफडीआई तीस अरब डालर के पास पहुँच गया। विदेशी निवेश आकर्षित करने के लिए पन्द्रह सौ से अधिक पुराने कानूनों को खत्म किया गया। कोविड–19 के दौरान पीपीई किट, एन–95 मास्क का उत्पादन करके बनाकर तथा दुनिया के देशों को वैक्सीन पहुँचाकर हमने दृढ़ संकल्प शक्ति का परिचय दिया है।

कहते हैं– ''ईश्वर भी सदा उन्हीं की मदद करते हैं जो स्वयं की मदद करते हैं।'' आत्मनिर्भर का मतलब यह भी नहीं कि हम सरकार से धनराशि लेकर कभी वापस ही न करें। इसका मतलब यह है कि आप अपना उद्योग या व्यवसाय सरकार की मदद से स्थापित करें और फिर धीरे–धीरे पैरों पर खड़े होते हुए सरकार का पैसा वापस करें। पूरी पृथ्वी पर मनुष्य ही है जिसने सभी असंभव कार्य किए हैं, फिर यह तो एक कोशिश करने की बात है।

ऋषभ जायसवाल (XII-G)

मेरे जीवन का लक्ष्य

लक्ष्यहीन जीवन भटकाव से भरा रहता है। ऐसा जीवन लोगों की दृष्टि में अच्छा नहीं माना जाता है। निरुद्देश्य घूमते रहने से अच्छा है कि हम अपने जीवन का एक लक्ष्य बना लें। मैं अब इंजीनियर बनने का ख्वाब देख रही हूँ। अब यही मेरे जीवन का लक्ष्य है। मैं यह निश्चय कर चुकी हूँ कि मैं एक योग्य इंजीनियर बनूँ। मैं कहीं पढ़ी थी कि एक असली इंजीनियर वह होता है जो अपने तेज दिमाग और अपने कलम से नए–नए आविष्कार करते हैं और दुनिया को नई ऊँचाइयों पे ले जाते हैं। ऐसा कहा गया है कि आज के आधुनिक युग के लिए इंजीनियरिंग रीढ़ की हड्डी साबित हुई है। अगर मुझे अपने लक्ष्य के तौर पर इंजीनियर बनना पड़ा तो मैं एक एग्रीकल्चर इंजीनियर ही बनूँगी क्योंकि मैंने बचपन से ही किसानों को संघर्ष करते हुए देखा है। मैं यही चाहती हूँ कि मैं नई–नई तकनीकों का आविष्कार करूँ जो आगे चलकर किसानों को कृषि कार्य में मददगार बने तथा कृषि की उत्पादन क्षमता बढ़े ताकि हमारे देश के किसान खुशहाल और समृद्ध बनें।

प्रियंका (IX-J)

डर लगता है

अमाशय को डर लगता है जब आप सुबह का नाश्ता नहीं करते। किडनी को डर लगता है, जब आप 24 घण्टों में 10 गिलास पानी भी नहीं पीते। गाल ब्लैडर को डर लगता है, जब आप 10 बजे रात तक सोते नहीं और सूर्योदय के पहले उठते नहीं। छोटी आंत को डर लगता है, जब आप ठण्डा और बासी भोजन खाते हैं। बड़ी आंत को डर लगता है जब आप तेलयुक्त मसालेदार मांसाहारी भोजन खाते हैं। लीवर को डर लगता है जब आप भारी तला भोजन, जंक और फास्ट फूड खाते हैं। हृदय को डर लगता है, जब आप नमक और कोलेस्ट्राल वाला भोजन करते हैं। पैनक्रियाज को डर लगता है जब आप स्वाद और फी के चक्कर में अधिक मीठा खाते हैं। आँखों को डर लगता है, जब आप अँधेरे में मोबाइल और कम्प्यूटर में देर तक काम करते हैं। मस्तिष्क को डर लगता है, जब आप नकारात्मक चिंतन करते हैं। क्या ये डर आपको अच्छा लगता है? ये आपके शरीर के ही कलपुर्जे हैं। इन्हें डराएँ मत, क्योंकि ये बाजार में उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए अपने शरीर के इन कलपुर्जों का विशेष ख्याल रखें। शुद्ध, सात्विक, प्राकृतिक भोजन करो, खूब व्यायाम करो, चिंता को त्यागो और मस्त रहो।

प्रियांशु वर्मा (XII-F)

फिर स्कूल चले हम

कोरोना की इस घातक महामारी के कारण पूरे भारत में मार्च महीने से ही सभी स्कूल बंद थे। पहले तो इतने दिनों की छुट्टी होने की खुशी समा नहीं रही थी। लेकिन जैसे–जैसे छुट्टियाँ बढ़ रही थी स्कूल की याद भी आ रही थी। जब एकाएक पूरे सात महीने की छुट्टी के बाद उन्नीस अक्टूबर से स्कूल खुलने की सूचना हम बच्चों के कानों तक आई, तब हमारे बीच उत्साह की लहर छाई। चार दिन पहले से सोचने लगे क्या पढ़ेंगे? कैसा होगा? कौन आएगा और नहीं आएगा? अच्छा लग रहा था कि इतने दिन बाद स्कूल जा रहे हैं। साथ ही कोरोना का डर भी अंदर ही अंदर खाए जा रहा था। जो दो–चार दिन बचे वो भी बीत गए और उन्नीस अक्टूबर का दिन सामने था। उस दिन मैं कुछ जल्दी उठकर स्कूल के लिए तैयार होकर 8:30 बजे स्कूल पहुँची। विद्यालय द्वार पर देखा तो पाया अमित सर सैनिटाइजर लिए खड़े थे और स्कूल में सामाजिक, शारीरिक दूरी के नियम भी बड़े ही कड़े थे। द्वार पर हैंड सैनिटाइज कराया गया, तापमान की जाँच हुई। स्कूल में इतनी अच्छी व्यवस्था देखकर कहीं न कहीं आश्चर्य भी हुआ। फिर दो कदम चलकर जैसे नजर उठाई तो देखा सलोनी खड़ी थी। मन तो किया गले मिल लें, लेकिन कोरोना भाई साहब का डर था क्या करें? फिर हम दोनो कक्षा में गए। वहाँ शहबाज सर पहले से मौजूद थे। कक्षा में प्रवेश करते ही लगा मानो किसी बिछड़े से मुलाकात हुई हो। मन को शांति और ठंडक मिली हो। इसके बाद हमने बैठने वाले स्थान को सैनिटाइज किया और बैठ गए। बच्चों में दूरी इतनी थी जैसे सामने वाले को कोरोना ही हुआ हो। धीरे–धीरे हमारी कक्षा के बच्चे आने लगे। कुछ के तो चेहरे भी मास्क के कारण अनजाने लगे। सबके ही चेहरों पर रंग–बिरंगा मास्क था। पता ही न चल पाया कौन दोस्त हमारा खास था। सर्वप्रथम पूरी तरह सुरक्षित व सामाजिक दूरी के साथ विज्ञान की कक्षा चली और सब कुछ समझ में भी आया। दूसरी कक्षा में शैलेन्द्र सर ने ट्राएंगल चैप्टर से इंट्रो करवाया बड़ा मजा आया। बाद में हमारी अंग्रेजी और हिंदी की कक्षा चली। 11:50 होते ही स्कूल की घंटी ने टन–टन की आवाज की। फिर हम सब कक्षा से बाहर निकले और सैनिटाइजेशन कराते हुए घर के लिए रवाना हुए। तो कुछ ऐसा ही उत्सुकता तथा जिज्ञासा से भरा था कोरोना की घड़ी में मेरा स्कूल का पहला दिन।

सौम्या यादव (X-A)

चलो किताबें खरीदें

एक दिन माँ ने मेरे भाई और मुझे कुछ पैसे देकर कहा "जाओ! कुछ अच्छी अपने मनपसन्द की किताबें खरीद लाओ,"। हम दोनों बहुत खुश हुए। क्योंकि हम दोनों को पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। हम सोचने लगे–क्या हम अभी जाएँ? क्या हम बाद में लाएँ? क्या हम चलें? क्या हम कल लायें? हमने तय कर लिया कि अभी खरीदकर लाते हैं।

अब हम सोचने लगे, क्या हमें बड़े बाजार जाना चाहिए? क्या हमें छोटी दुकान में जाना चाहिए? क्या हमें किसी के साथ जाना चाहिए? क्या हमें अकेले जाना चाहिए? हमने तय किया कि केवल हम दोनों छोटी दुकान में जाएँगे।

क्या हमें ऐसी किताब खरीदनी चाहिए जिसमें ढेर सारे चित्र हों? क्या हमें वह किताब खरीदनी चाहिए, जिसमें खूब कहानियाँ हों? क्या हम पतली–सी किताब खरीदें? हम तय नहीं कर पाये।

जब हम दुकानदार के पास पहुँचे, वह हमें देखकर मुस्कराते हुए बोला– "बच्चों, आओ! मैं तुम्हें हर प्रकार की किताबें दिखाता हूँ" उसने कहा, ये किताबें हमारे लोक–जीवन, पशु, पक्षियों, प्रकृति, पर्यावरण, जीवनी, यात्रा, इतिहास, विभिन्न देशों की संस्कृतियों और धर्म–आध्यात्म पर आधारित हैं।

मैंने कुछ किताबें उठाई, मेरे भाई ने कुछ किताबें उठाई। मैं फर्श पर बैठ गई, वह कुर्सी पर बैठ गया और हम दोनों पढ़ते गए। कितनी शांति थी। यहाँ कोई आवाज नहीं थी। एक घंटा बीता, दो घंटे बीते, आखिर में, हम दोनों ने तय कर लिया कि हमें कौन–सी किताबें खरीदनी हैं। मैंने एक मोटी सी किताब खरीदी जिसमें कहानियाँ थी। मेरे भाई ने एक बड़ी किताब खरीदी जिसमें सिर्फ तस्वीरें थीं। हम दोनों दौड़कर हँसते हुए घर आकर माँ के पास उनके बिस्तर पर चढ़कर बैठ गए। उन्होंने हमें अपने पास बिठाकर दुलारते–सहलाते रहे। उसके बाद हम दोनों अपनी–अपनी जगह बैठकर पढ़ते रहे, पढ़ते रहे और ढ़ेर सारी बातें करते रहे.....।

रिया अग्रहरि (IV-D)

प्यारी माँ

प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ।
चलना हमें सिखाती माँ,
मंजिल हमें दिखाती माँ।
सबसे मीठा बोल है माँ,
दुनिया में अनमोल है माँ।
खाना हमें खिलाती माँ,
लोरी गाकर सुलाती है माँ।
प्यारी जग से न्यारी माँ,
खुशियाँ देती सारी माँ।

अवर्तिका (I-B)

मेरी माँ

मेरी माँ का नाम शुभ्रा है। मेरी माँ सबसे अच्छी है। मुझसे बहुत प्यार करती है। वह सुबह सबसे पहले उठ जाती हैं और सबके लिए स्वादिष्ट नाश्ता बनाती हैं। वह घर के सभी लोगों का ध्यान रखती है। मेरी माँ मेरी आदर्श हैं। मेरी माँ मेरी सबसे अच्छी दोस्त हैं। मैं अपनी माँ को बहुत प्यार करती हूँ। मेरी माँ ईश्वर द्वारा मेरे और मेरे भाई–बहन के लिए दिया गया एक वरदान है। मैं भगवान को धन्यवाद देती हूँ कि उन्होंने मुझे दुनिया की सबसे अच्छी माँ दी है। मेरी माँ बहुत प्यारी और समझदार है। मेरी माँ एक बहुत अच्छी इंसान है। घर में सभी उनका सम्मान करते हैं। मेरी माँ मुझे अच्छी बातें सिखाती है। मुझे सच्चाई के रास्ते पर चलने की सीख देती है। वह मुझे रोज सुबह स्कूल के लिए तैयार करती है। मेरी माँ मुझे पढ़ाई में भी मदद करती है। मैं अपनी माँ को बहुत प्यार करती हूँ और मेरी माँ भी मुझसे बहुत प्यार करती है।

निधि पाण्डेय (IV-A)

पेड़ हमारे प्यारे हैं

पेड हैं तो जहान है
जग में खुशियों की बहार है
धुँआ सारे यह करता कम
ऑक्सीजन देता भरपूर
सुंदर–सुंदर फूल खिलाता
मन आनन्द से भर जाता
कितने अच्छे फल यह देता
खाकर बनते बलवान हम
भरी दोपहरी हमें बचाता
धरती में शीतलता लाता
कितना ख्याल हम सबका रखता
करें संकल्प हम सभी मिलकर
एक पौधा तो जरूर लगाएँ।

सतीश मिश्रा (VI-F)

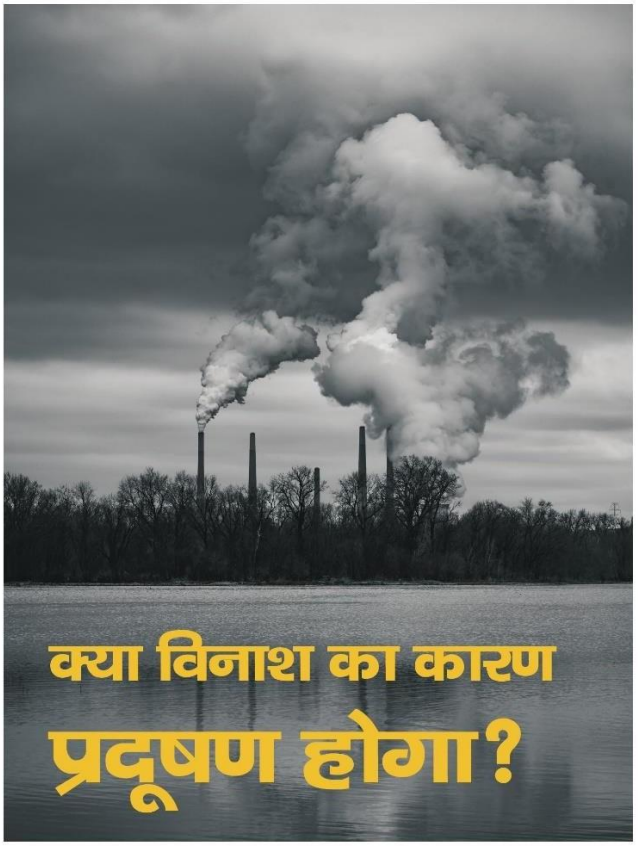

क्या विनाश का कारण प्रदूषण होगा?

पृथ्वी पर जीवन, जल, कार्बन तथा ऊष्मा के एक खास संतुलन के कारण संभव हुआ। इसमें कोई भी संतुलन गड़बड़ाने से जीवन पर खतरा हो जाएगा। इन तीनों के संतुलन के अतिरिक्त मिट्टी एवं वायु भी जीवन के लिए अपरिहार्य चीजें हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था "प्रकृति हमारी जरूरतों को पूरा कर सकती है, लालचों को नहीं।"

प्रदूषण एक समस्या के रूप में तब शुरू हुआ जब भाप के इंजन के प्रयोग के पश्चात पहली औद्योगिक क्रांति ने जन्म लिया। धीरे–धीरे दूसरी औद्योगिक क्रांति तक आते–आते पूरी दुनिया में व्यापक उत्पादन प्रणाली का जोर हो गया। दुनिया की अर्थव्यवस्था में हाइड्रोकार्बनिक खनिज तेल, रसायनों, प्लास्टिक और अंततः विकिरण फैलाने वाली परमाणु सामग्री का जोर हो गया। बहुराष्ट्रीय रासायनिक दानवों में कृषि में उर्वरकों व कीटनाशकों का ऐसा भयंकर प्रयोग करवाया कि दुनियाभर की मिट्टी और अंततः भूगर्भ जल में खतरनाक रसायनों का स्तर बुरी तरह से बढ़ गया। मच्छरों को मारने के लिए और अन्य कीटों को भगाने वाले रसायनों में समस्त पारिस्थितिकी तंत्र पर खतरा पैदा कर दिया है। दुनिया की अनगिनत जीव प्रजातियाँ इस वजह से लुप्त हो गई। भारत में भी गिद्ध, गौरैया जैसे पक्षियों का कम दिखना इसी के कारण हुआ। भारी संख्या में खनन, औद्योगीकरण तथा बसावटों के दबाव में कार्बनिक गैसों को सोखकर जीवनदायिनी आक्सीजन में बदलने वाले पृथ्वी के फेफड़ों यानी वनों को लगातार काटा गया है तथा लगातार कार्बन डाईऑक्साइड एवं अन्य खतरनाक गैसों का स्तर बढ़ता ही रहा है क्योंकि सारा विकास अंततः ज्यादा से ज्यादा कार्बन जलाने पर निर्भर रहा है। इन प्रवृत्तियों ने पृथ्वी पर हरित गृह प्रभाव का संकट उत्पन्न किया है, स्थिति यह आ गई कि दुनियाभर में जलवायु परिवर्तन के आकस्मिक व भयावह दुष्परिणामों से दुनिया का सामना हो रहा है।

पृथ्वी को बचाने के लिए इनका विकल्प खोजना एवं अक्षय उर्जा को बढ़ावा देना एकमात्र विकल्प रह गया है। परमाणु कचरा, जो हजारों वर्षों तक पर्यावरण को दुष्प्रभावित करता रहता है, उसका क्या होगा? परमाणु बिजली बनाना बेहद मँहगा काम है, उतने पैसे में यदि देश में सोलर मिशन चलाया जाए तथा दुनियाभर में ऐसे प्रयास हो तो तस्वीर ही बदल जाए। दुनियाभर के 20 सबसे अधिक प्रदूषित शहरों में 18 एशिया में हैं, उनमें से भी 13 केवल भारत में हैं। दिल्ली और बीजिंग दुनिया के सबसे अधिक प्रदूषित शहर हैं। यहाँ प्रदूषित हवा का स्तर सामान्य सहन सीमा से 10 गुना तक ज्यादा हो चुका है। लंदन जैसे शहर में वायु प्रदूषण से प्रतिवर्ष 9500 मौतें होती हैं तो दिल्ली में यह दर 80 व्यक्ति प्रतिदिन है। हवा तो हवा, पानी और जमीन की स्थिति भी कुछ अच्छी नहीं है, पानी में मिले खतरनाक रसायनों से भी मौतें हो रही हैं, समुद्र कचराघरों में तब्दील हो रहे हैं। यह भोगवादी जीवनशैली जो अमेरिका के नेतृत्व में सामने आई है, नोम चॉम्स्की के शब्दों में "इसकी भूख शांत करने के लिए कई पृथ्वियों की जरूरत पड़ेगी।" यदि हम आज भी सँभल जाएँ और अपनी जीवनशैली व तकनीक में परिवर्तन कर लें तब भी 50 वर्षों तक पृथ्वी पर इसके दुष्प्रभाव दिखते रहेंगे, उसके बाद ही स्थिति में बदलाव आएगा, वह भी तब जब हम अभी भी संभल जाएँ।

तनु वर्मा (XII-F)

यदि मैं पक्षी होता !

यदि मैं पक्षी होता तो मैं आकाश की अनंत ऊँचाइयों को छूता और ठंडी हवा का लुत्फ उठाता। अन्य सभी पक्षियों की तरह मेरी जिंदगी भी कितनी आनंद से भरपूर होती और मैं दिनभर आकाश में उड़ता रहता तथा जब मुझे भूख–प्यास लगती तब मैं अपने मनपसन्द फल वाले पेड़ पर जाता और वहाँ से अच्छे स्वादिष्ट फलों को खाकर अपना पेट भरता और प्यास बुझाने के लिए मैं किसी नदी का शीतल जल पीता और मस्त रहता।

यदि मैं पक्षी होता तो मैं किसी शहर में रहने की अपेक्षा एक घने जंगल में रहना पसंद करता। क्योंकि शहर में आजकल इतना प्रदूषण हो गया है, जिससे वहाँ पर रहना किसी खतरे से कम नहीं है। दूसरी ओर जंगल में अनेकों पेड़ होते हैं। पेड़ पर बैठकर मैं मधुर गीत गाता जो सभी को प्रिय लगते हैं।

हर एक मानव का सपना होता है कि वह ऊँचे से ऊँचे पहाड़ पर पहुँचकर ऊँचाई का लुत्फ उठाए। मैं ऊँचे पहाड़ों की चोटियों पर जाकर बैठा करता। जहाँ से पृथ्वी का सुंदर नजारा देखने को मिलता। अन्य सभी पक्षियों की तरह एक डाल से दूसरी डाल पर फुदकता और एक कतार बनाकर अन्य पक्षियों के साथ घूमने जाता।

जिस प्रकार काव्य तथा साहित्य में मोर की सुंदरता तथा मीठी वाणी वाले को कोकिला की उपमा दी जाती है। लोभी को गिद्ध, ढोंगी को बगुला भगत, नीलकंठ को शिव का प्रतीक, बाज को वीरता तथा शौर्य का प्रतीक माना जाता है उसी प्रकार मेरे लिए भी किसी न किसी उपमा का प्रयोग किया जाता और निश्चित ही मेरे लिए गर्व की बात होती।

यदि मैं पक्षा होता तो मैं मानव से मित्रता स्थापित कर उसका हित करता। छोटे–मोटे कीड़े–मकोड़ों को खाकर फसल की रक्षा करता। परन्तु मैं पिंजड़े की कैद में कभी न आता। मुझे आजादी अत्यंत प्रिय है। इसलिए मैं मनुष्यों को समझाता कि किसी को भी कैद रखना गलत है। पक्षी बनने के पीछे एक प्रमुख वजह यह भी है कि कुछ पक्षियों को देवताओं के वाहन होने का गौरव भी प्राप्त है। कितनी प्रसन्नता होती मुझे गरुड. बनकर भगवान विष्णु का उल्लू बनकर देवी लक्ष्मी का, हंस बनकर ज्ञान की देवी माता सरस्वती का वाहन बनने में।

काश! मैं पक्षी होता और स्वछन्द, उन्मुक्त, बंधनरहित, आकांक्षारहित जीवन यापन करता।

निखिल यादव (XI-F)

यादों के झरोखों से

वर्ष 2012–13 की बात है, नर्सरी की कक्षाएँ चल रही थी हालांकि उस समय मैं कक्षा 8 में हिन्दी और संस्कृत पढ़ाती थी, लेकिन बच्चों से अपने अप्रतिम लगाव के कारण मैं नर्सरी कक्षा में भी एक पीरिएड ले लेती थी।

अगस्त का महीना चल रहा था। एक बच्चे का नया प्रवेश हुआ था। मैं कक्षा में आई तो मेरी नजर उसी नए बच्चे को ढूँढ़ रही थी। हालांकि नये बच्चों को ढूँढने में कुछ ज्यादा परेशानी नहीं होती थी अक्सर उनकी रोनी सूरत को देखकर पता चल जाता था। लेकिन आज कुछ ऐसा नहीं था कोई भी सूरत रोनी नहीं थी और न ही रह–रहकर गूँजने वाली सिसकियाँ थी। मैंने चारों तरफ नजर दौड़ाई कोई भी सूरत नई नहीं थी। नया था तो बस कक्षा का वातावरण पूरी कक्षा अस्त–व्यस्त थी। कहीं पर बॉटल से पानी गिर रहा था, तो कहीं पर बिस्किट के खाली पैकेट फेंके हुए थे। एक बैग खुला हुआ था उसके कुछ कॉपी और किताब बिखरे हुए थे, और कॉपी से कागज फाड़कर पूरी कक्षा में बिखराया गया था। मैंने अपने बच्चों को डस्टबिन का उपयोग करना सिखा दिया था वे इस तरह से कक्षा को गंदा नहीं कर सकते। मैंने बैग पैक करते हुए बच्चों से पूछा, ये बैग किसका है? कोई कुछ नहीं बोल रहा। मैंने फिर पूछा–तो एक बच्चे ने धीरे से टेबल के नीचे की तरफ इशारा किया। मैंने देखा तो हमारे बाल परिवार के नवआगंतुक टेबल के नीचे छुपे बैठे थे। शायद उसको आभास था कि उसने कुछ गलत किया है और इसकी उसे सजा भी मिलेगी।

फिलहाल मैंने उसको प्यार से उठाकर कुर्सी पर बैठाया। मेरे लिए सुकून की बात यह थी कि वो माँ के लिए रो नहीं रहा था और मुझे कुछ ज्यादा माथापच्ची नहीं करना पड़ा। लेकिन मुझे आश्चर्य हो रहा था कि ये पहला बच्चा है जो पहली बार स्कूल आने पर रोया नहीं। लेकिन धीरे–धीरे वह मुझे सामान्य बच्चों से कुछ अलग लगने लगा। वह हर छोटी–मोटी शरारतें करता जो स्कूल के नियम के विरुद्ध थी।

इधर बीच तो उसकी शरारतें भी बढ़ने लगी थी अब एक नई शिकायत आने लगी थी कि वो किसी न किसी बच्चे का लंच चुराकर खा जाता है। मैंने हर बार उसे बुलाकर समझाया लेकिन कोई फायदा नहीं। एक दिन फिर वही शिकायत मैं खीझ गई। मैंने गुस्से में उससे कहा–तुम दूसरे की टिफिन क्यों चुराते हो तुम्हारी खुद की टिफिन क्या हुई? उसने कातर स्वर में कहा 'नहीं लाया हूँ'। मैंने कहा–कल तुम अपनी मम्मी को लेकर आना। उसने तपाक् से कहा 'मेरी मम्मी नहीं है'।

मैं स्तब्ध थी मुझे उसके बातों पर यकीन नहीं हो रहा था लेकिन मैंने उससे कुछ न कहा। अगले दिन मैंने उसके अभिभावक को बुलाया। अभिभावक जो रिश्ते में उसके दादा थे, काफी बुजुर्ग थे। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि इसके पैदा होने के एक महीने बाद इसकी माँ एक सड़क दुर्घटना में चल बसी। घर में दादी हैं, जो काफी बीमार चल रही हैं और वही इनकी देखभाल करती हैं।

अब मुझे कुछ और जानने की जरूरत नहीं थी। मुझे यह आभास हो गया कि इसके शरारती होने का, टिफिन चोरी का, इस तरह मलिन और शुष्क होने का क्या रहस्य है? पहले दिन वह स्कूल आया तो रोया क्यों नहीं? सामान्य बच्चे जिस ममता की छाँव से अब तक अलग नहीं होना चाहते उस अलगाव को वह पैदा होते ही झेल रहा है। उसकी मलिनता को देखकर जो भी मलिनता मेरे मन में आई थी, अब उसकी जगह मेरी ममता ने ले लिया।

आराधना शुक्ला (PRT-Hindi)

मेरी प्यारी शिक्षिका

घर छोड़कर शुरू–शुरू में,
जब स्कूल चला जाता था।
माँ को याद करके मैं आँसू खूब बहाता,
एक दिन प्यारी मैम ने मुझको समझाया।
मैं भी तो माँ जैसी हूँ कहकर मुझे सहलाया,
आओ, मेरे साथ खेलो कहकर मुझे बहलाया।
आपने सिखाया हँसना–खेलना,
करके प्यार–दुलार।
रहना प्रेम से आपस में,
न करना तुम तकरार।
इसलिए प्यारी मैम को,
धन्यवाद! बारम्बार।

तेजस (II-A)

बाधाओं से क्यूँ डरना

कर लो जो है तुझको करना,
लोगों से क्यूँ इतना डरना।
जो आज इनसे डर जाएगा,
कल को तू ही पछताएगा।।

जब तू आगे बढ़ना चाहेगा,
ये ही तुझे डराएंगे।
पीछे तू रह जाएगा,
ये ही तुझे चिढ़ाएंगे।

कर संघर्ष निखर जा तू,
कर पूरा अपना हर सपना।
वो कर जो तुझको है करना,
लोगों से इतना क्यूँ डरना?

अपना पथ तू स्वयं वरण कर,
असफलता से तनिक न डरना।
मंजिल सदा उसी की होती,
सीखा जिसने काँटों में रहना।।

अनमोल सिंह (X-L)

हौसले की उड़ान

आँखों में आस दिल में विश्वास
लबों पर मिठास लेकर चली मैं आज
मन में आता डॉक्टर बन जाऊँ
मन में आता अफसर बन जाऊँ
पर कोई राह दिखा दे मुझको
वो प्यारा राज बता दे मुझको
जिस पर चल मैं आगे बढ़ जाऊँ
मम्मी–पापा का नाम रोशन कर जाऊँ।

आराध्या पाठक (II-A)

एक आस

एक आस लिए बैठी हूँ
एहसास लिए बैठी हूँ
अपने ख्वाबों को पूरा करने का
अरमान लिए बैठी हूँ ।
उम्मीद है वो सूरज भी जगमगाएगा
जिस दिन उसकी रोशनी में मेरा नाम भी दिख पाएगा
मैं हारी नहीं हूँ, अब तक
हराई गई कई बार
पर आज भी अपनी जीत का आगाज लिए बैठी हूँ
हौसला है पिता का, माँ ने जज्बा दिया है,
आगे बढ़ने की ललकार लिए बैठी हूँ।
उम्मीद है दुनिया में सच्चाई ही जीते
उसी जीत की पर्ची में बस अपना
नाम लिखने बैठी हूँ।
यह आस लिए बैठी हूँ,
यह विश्वास लिए बैठी हूँ।।
ऐ जिन्दगी तेरी हर चुनौती का
मैं जबाब लिए बैठी हूँ।
एक आस लिए बैठी हूँ।

अंजली यादव (VIII-B)

बेटी

जब–जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी,
आँगन की चिड़िया है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नए–नए रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए उजाला लाती है बेटी,
बार–बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।

वर्तिका पाण्डेय (VI-F)

हम बच्चे

बच्चे मन के सच्चे,
पर क्यों कमरे में बन्द रहते।

नहीं चाहिए चॉकलेट, टॉफी,
गलती हुई तो हमको दे दो माफी।

न हम कोई बंदर–भालू, न कोई डिब्बे के चुकन्दर,
हम हैं खुशी, नटखट से भरे देखने में सुन्दर–सुन्दर।

घर का आँगन बने वीरान,
खेल में मन रहे सूनसान।

फिर भी हो थोड़ा–सा प्यार तो बनाना हमें मेहमान,
हम बच्चे हैं नटखट, चटपट पर हैं, थोड़े बुद्धिमान।
अब न सहेंगे, अब न रुकेंगे, अब खेलेंगे अपने मैदान।

प्रखर वर्मा (IX-B)

जीवन अनमोल है

जीवन अनमोल है, इसे व्यर्थ न गंवाना।
काम ऐसा करो जिसे, सराहे पूरा जमाना।।
जीवन अनमोल है, इसे व्यर्थ न गंवाना।।

मन में अगर ठान लो तो छू लोगे आसमान।
खुशियों की बारात होगी, जिन्दगी में विराजमान।।
जिन्दगी का लक्ष्य पैसे नहीं, खुशियाँ भी है कमाना।
जीवन अनमोल है, इसे व्यर्थ न गवाँना।।

न देखो तुम अपने भूत या भविष्य को।
पूरी मेहनत लगाकर संवारो वर्तमान को।।
दिल की आवाज को एक दफा अवश्य आजमाना।
जीवन अनमोल है, इसे व्यर्थ न गवाँना।

यदि जीवन व्यर्थ गवाँवोगे तो पड़ेगा पछताना।
जीवन अनमोल है, इसे व्यर्थ न गवाँना।।

अस्तुति सिंह (VIII-B)

स्त्री जीवन

नारी सुख की खान है
नारी है तो नर है
नारी जीवन की आस है
वह नारी जो अब तक थी
पलकों में सिंचित सी
नारी उस अनमोल रतन का नाम है
सबका खयाल रखना जिसका काम है
कितने रूपों में उसकी सुंदरता
करते सभी बखान हैं
शहर दर शहर हो रही
अनाचार का शिकार है।
हम भूल रहे अपनी मर्यादा
मानवता को कर रहे शर्मसार
आज वही है डरी–डरी सी नारी
हमको करनी उसे बचाने की तैयारी।

अदिति गुप्ता (XI-I)

मेरा परिवार

दादी जी की बीती बातें,
दादी के संग की रातें।
कहते–सुनते सब मिलकर,
खुशियाँ आती पंख पसार।

मेरा प्यारा सा परिवार,
सुख–समृद्धि का आधार।
रिश्तों की डोरी से बँधकर,
कम हो जाता दुःख का भार।

घर के मुखिया बरगद जैसे,
देते छाया परम अपार।
इनके साये में पलकर,
सीखे हमने ऊँचे संस्कार।

अथर्व यादव (4-A)

शिक्षक हैं मेरे भगवान

शिक्षक हैं मेरे भगवान
मुझे बनाया है बलवान
संयमी, उत्साही, आशावादी
स्नेह, विद्वता और सच्चाई
उनमें ये हैं गुण अनेक
अनुशासन, कर्तव्य पालन की
प्रेम से देते हमको सीख
उनकी डाँट, उनकी हँसी
उनका त्याग, उनका सहयोग
कर देते हर मुश्किल आसान
हमको है उन पर अभिमान
उनकी आज्ञा है सिरमौर
उनका आदर, उनका सत्कार
रखेंगे हर वक्त बरकरार।

प्रियांश पाठक (VIII-A)

बस्ता

मेरा बस्ता भारी बस्ता
कर देता है हालत खस्ता
रोज–रोज विद्यालय जाना
बड़ा कठिन है भार उठाना
पानी, खाना इसमें रखना
सुबह सजाने को पड़ता जगना
मेरी यह लाचारी समझो
मोटी किताबें सभी हटा दो
बस्ते का अब भार घटा दो
कम्प्यूटर का आ गया जमाना
फिर भारी बस्ता क्यों उठाना?

समिधा सिंह (VII-D)

बैग नहीं, दोस्त है मेरा

बैग नहीं दोस्त है मेरा
स्कूल का साथी है मेरा
भूख लगे तो खाना देता
प्यास लगे तो पानी देता
मुझे अच्छी–अच्छी बातें सिखलाता
रूप बदलकर साथ निभाता
पापा के साथ ऑफिस जाता
मम्मी के साथ शापिंग जाता
कभी दादी के साथ मंदिर जाता
सफर में भी है साथ निभाता
कर देता है काम आसान
है मुझको इस पर अभिमान
यह बैग नहीं दोस्त है मेरा।

तान्या जायसवाल (VIII-B)

इंसानियत है अनमोल

इंसानियत है अनमोल
वक्त है समझो इसका मोल
क्यों कभी गरीब पर तरस नहीं खाते?
क्यों किसी घायल की पुकार पर नहीं आते?
क्यों किसी पेड़ को काटते वक्त
तुम उसकी उपयोगिता भूल जाते हो?
क्यों तुम दूसरों में कमी निकालते हो?
क्या कभी अपनी गलती भी सुधार पाते हो?
रात गए जब बिस्तर पर सोते हो
क्यों नहीं अपनों से खैर–ख्वाहिश की बात करते हो
माना कि जमाना बदला है
कभी–कभी अच्छाई ही दोषी ठहराई जाती है
पर तुमने क्यों अच्छाई का दामन छोड़ा है
अरे! कब से बैठे हो उस कोने में?
आओ! तुम सब सामने आओ
इंसान का इंसान से नाता तुम्हीं ने तोड़ा है
अब तुम ही उसे फिर बनाओगे
ये सब तुम्हारे अपने ही हैं
क्यों इनको गले न लगाओगे?

आर्यन यादव (VIII-D)

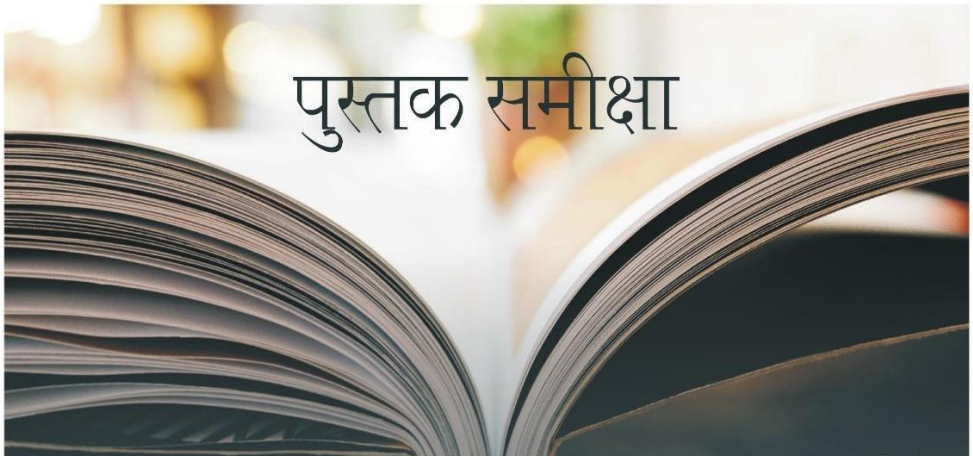

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम–मानस का हंस
लेखक–अमृतलाल नागर
पुस्तक परिचय–गोस्वामी तुलसीदास के जीवन पर आधारित इस उपन्यास की वस्तु रोचक है ।

उपन्यास में तुलसीदास का जन्म यमुना तट के राजापुर से करीब एक गाँव में हुआ बताया गया है । पिता का नाम आत्माराम और माँ का नाम हुलसी था । तुलसी के जन्मते ही माँ का निधन हो गया। पिता ज्योतिषी थे, अतः बुरे नक्षत्रों में जन्म के कारण ,जन्मते ही तुलसी को त्याग दिया । तुलसी का लालन–पालन एक दायी, पार्वती ने किया । छः साल की उम्र तक दायी का देहांत हो गया। उनके सम आयु मित्र ने छल किया, स्थान छोड़ने को विवश कर दिया । भटकते हुए वे सूकर खेत पहुँच गए। जहाँ महावीरजी के मंदिर में भेंट नरहरिदास बाबा से हुई । जो उनके गुरु बन गए। इनसे तुलसीदासजी ने संस्कृत, ज्योतिष–शास्त्र, एवं धर्मग्रंथों की शिक्षा प्राप्त की। यहाँ उनका विवाह पं0 दीनबंधु की बेटी रत्नावली से हुआ। उनकी एक संतान भी हुई , फिर तुलसी काशी चले आए। यहाँ अपने मित्र गंगाराम की एक समस्या के समाधान हेतु ''रामाज्ञा प्रश्न'' की रचना की। जिसके एवज में प्रचुर धन प्राप्त हुआ । फिर राजापुर लौट आए। पत्नी संतान समेत पिता के घर गई थी। उनसे मिलने के अधैर्य ने उन्हें विचलित कर दिया। स्थल–काल से परे वे ससुराल पहुँच गए। असमय, अधैर्य के कारण अपमानित एवं मज़ाक के पात्र बनें । रत्नावली का मोह उन्हें यहाँ खींच लाया था । रत्नावली का व्यंग्य – ''स्त्री और पुरुष में यही तो अंतर है । नारी भले कामवश माता क्यों न बने, किंतु माता बनकर वह एक जगह निष्काम हो जाती है और पुरुष पिता बनकर भी दायित्व बोध भली प्रकार से अनुभव नहीं कर पाता । सच पूछो तो यह निरे चाम का लोभी है ,जीव में रमे राम का नहीं ।''

इससे तुलसीदास को बोध हुआ कि मैं सांसारिक कर्मों में लिप्त रहकर अपना जीवन नष्ट कर रहा हूँ । मध्य रात्रि को ही पत्नी एवं संतान को छोड़कर हमेशा के लिए चल निकले। घर त्याग के पश्चात उन्होंने अमर ग्रंथ 'रामचरित मानस ' की रचना की ।

काशी में रहते हुए 'रामचरित मानस– के माध्यम से लोगों में भक्ति व भावात्मक एकता का मंत्र फूँकने लगे। उन्होंने रत्नावली को वचन दिया था कि मृत्यु से पूर्व उससे मिलने अवश्य आएँगे और वह यह वचन निभाते हैं।

हमने देखा कि मानस का हंस किंवदंतियों पर आधारित तुलसीदास के जीवन की पीड़ा ,अभाव,करुणा,तिरस्कार एवं संघर्ष से परिपूर्ण कथा है। कोमल हृदय के अति संवेदनशील तुलसीजी पत्नी के मार्मिक वचन से आहत होते हैं और जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आता है, क्रमशः अनेक श्रेष्ठ रचनाओं के द्वारा जग प्रसिद्धी पाते हैं, महाकवि के रूप में जाने जाते हैं।

उपन्यास में अकबर के शासन काल को भी चित्रित किया गया है। राजनीतिक स्थिति अराजकता पूर्ण थी , जो उपन्यास के प्रारंभ में दिखाई देती है। इस उपन्यास की विशेषता है कि तत्कालीन सामाजिक परिवेश अपनी समग्रता में उपस्थित है। उस समय वर्ण व्यवस्था, ऊँच–नीच, आश्रम व्यवस्था नहीं थी, पर संन्यासी साधु , भक्तों,योगियों आदि का बहुत आदर होता था , सम्मान का भाव भी था। स्त्रियों की स्थिति निम्न स्तर की रही । कुल मिलाकर कह सकते हैं कि मानस का हंस तुलसीदास की जीवनी ही नहीं ,उस युग का सांस्कृतिक इतिहास भी है। लेखक ने तुलसीदास के बहाने उस युग की सामाजिक , धार्मिक अंतरविरोधों का चित्रण भी किया है जो स्वयं तुलसी की जीवनी में दिखाई देते हैं। इस उपन्यास में भक्ति आंदोलन के सांस्कृतिक–सामाजिक पक्ष को रखते हुए ,ये बताया गया है कि हम वर्तमान समस्याओं का सामना तभी कर सकते हैं ,जब जन सामान्य का उत्पीड़न समाप्त हो, भेद–भाव की दीवारें टूटें और सभी लोगों में एकता और भाईचारे की भावना प्रबल रूप से पनपे ।

यह कृति आज भी प्रासंगिक इसलिए है कि हमें धार्मिक, सांप्रदायिक, जातिवाद से ऊपर उठकर मानवतावादी दृष्टि का अनमोल संदेश देती है ।

पंकज कुमार सिंह (टीजीटी हिंदी)

INTER HOUSE CHAMPIONS

CCA ANNUAL REPORT 2020-21

S.N.	Activities	K	L	R	T
1	Story Telling (Hindi)	4	.	6	10
2	Speech (Hindi)	4	10	6	10
3	Declamation (English)	6	10		4
4	Essay Writing (Hindi)		10	6	4
5	Debate (Hindi)	4	6		10
6	Quiz (Hindi)	4	6		10
7	Impression Painting	10	6	4	
8	Painting Competition	10	4	6	
9	Story Telling (English)		10	4	6
10	Debate (English)	10		6	4
11	Extempore (Hindi)		6	4	10
12	Building Word Wall	4	6	4	10
13	Eassy Writing (English)	4	10	10	6
14	Grammar Quiz(English)		10	4	6
15	Speech (English)	4	6	10	6
16	Poem Recitation		6	4	10
	TOTAL	64	106	74	106

REPUBLIC DAY CELEBRATION

ANNUAL DAY CELEBRATION (VIRTUAL)

SCHOOL IN ACTION

YAMAHA

SPARK PLUGS X

ANSUM PATEL
97.6%

SUHANI PANDEY
96.6%

SHIVANSHU VISHWAKARMA
96.6%

SHIVANI DWIVEDI
96.0%

PRANJAL YADAV
95.6%

SAURABH YADAV
95.2%

ANUSHKA CHAUDHARY
95.2%

MD. ARSLAN
94.8%

PALAKSHI SINGH
94.8%

HIMANSHU UPADHYAY
94.8%

PRIYANSHU GUPTA
94.6%

SHAURYA PATEL
94.6%

ASTHA SINGH
94.6%

PRAVI JHA
94.4%

TANU YADAV
94.2%

AKASH YADAV
94.2%

RIYA SINGH
94.2%

SHIVA SINGH
94%

IFRAH KHAN
94%

AYUSH MISHRA
94%

MUSKAN GUPTA
94%

VIKAS VISHWAKARMA
93.6%

UJJWAL SHUKLA
93.6%

TANMAY DWIVEDI
93.4%

NISHTHA CHAKRAWARTI
93.4%

HARSH YADAV
93.2%

SATYAM GUPTA
93.2%

SHANTANU AGARWAL
93%

ATUL TIWARI
92.8%

KISHAN JAISWAL
92.8%

GAURAV SINGH
92.8%

SHASHI SHEKHAR
92.6%

ZAEEM ABBAS
92.6%

ANKIT GUPTA
92.4%

UMESH CHAUHAN
92.4%

SHRUTI VERMA
92.4%

RISHABH PATEL
92.4%

GAGAN PATEL
92.2%

MAISOORA JAVED
92.2%

SATYA KUMAR
92.2%

VIKRANT MISHRA
92.2%

DHANANJAY YADAV
92%

SHAFAQ GULAM
91.8%

SUMIT UPADHYAY
91.8%

ANURAG YADAV
91.8%

PRIYANSHI CHAUDHARY
91.6%

SWAPNIL SINGH
91.6%

ALIMA MEHDI
91.4%

VIDHI MISHRA
91.4%

ANKUR CHAURASIYA
91.2%

SHIVAM KUMAR
91.2%

ARYAN VERMA
91%

AMAN TIWARI
90.8%

NISHANT MADHESHIYA
90.8%

MANSI GUPTA
90.8%

SIDDHARTH
90.8%

SATYAM TRIPATHI
90.6%

MEENAL GAUTAM
90.6%

AYUSH JAISWAL
90.4%

AMAN MISHRA
90.4%

SRISHTEE SINGH
90.2%

RITUL SINGH
90.2%

SHIKHA VERMA
90.2%

PATH FINDERS XII

HARSHIT BAJORIA
98.2%

TANYA SONI
98%

RISHABH GUPTA
97.6%

SATVIK RAI
96%

MANSIJ SAGAR
95.8%

SAMAN JAWAID
95.8%

SHUBHAM JAISWAL
95.8%

DEEPAK YADAV
95.8%

ABHINAV JAISWAL
95.6%

PRAVEEN SHUKLA
95.6%

JANNAT APAQUE
95.6%

AYUSH ANAND
95.4%

SHIKHAR GUPTA
95.4%

NIVESH AGRAHARI
95.2%

VISHWAJEET SINGH
95%

SHIVA YADAV
95%

HIMANSHU VERMA
94.8%

SAUHARD ABHINAV
94.8%

VISHAL KUMAR
94.8%

MOHD ARIF
94.6%

SAUMYA VERMA
94.6%

DIVYA PRAKASH
94.6%

YUVRAJ CHAUHAN
94.4%

JAHNAVI YADAV
94.4%

ANURAG YADAV
94.2%

HUSAIN ASGHAR
94.2%

AZAD VERMA
94%

AMAN VERMA
93.8%

SUMATI SHUKLA
93.8%

ADITYA MADHESIYA
93.6%

PRABHAT YADAV
93.4%

DIKSHA MISHRA
93.4%

SATYAM BARANWAL
93.2%

PRIYANSHI MISHRA
93.2%

PRAFFUL AGRAWAL
93.2%

PRATYUSH SONI
93%

PRASOON YADAV
93%

PRIYA JAISWAL
92.8%

KSHITU SRIVASTAVA
92.8%

SHANTANU SINGH
92.4%

SURAJ MAURYA
92.4%

PRAVEEN YADAV
92.4%

SHREYA MISHRA
92.4%

HUSSAIN ASGHAR
92.2%

RAJ TIWARI
92.2%

NIDHI GUPTA
92.0%

GAURAV GAUTAM
91.8%

MANSI SINGH
91.8%

HARSH KASHYAP
91.8%

SYED M. ALI ASKARI
91.6%

ANKITA KUMARI
91.6%

ABHISHEK YADAV
91.2%

RIYA SINGH
91.2%

KIRTI VERMA
91.2%

RIYA SONI
91.2%

VAIBHAV RANJAN
91%

HUBANA SHAMIM
91%

RIYA AGRAWAL
91%

SALONI KUMARI
91%

JAY
91%

HARSH YADAV
90.8%

SAUMYA SINGH
90%

SHAKTI PANDEY
90%

ADIEU

Dear Students,

The Dedication with which you have pursued your studies in the school will guide you throughout your life. Work hard with passion and positivity. Wishing you all the best for future endeavours !

XII-A

XII-B

XII-C

XII-D

XII-E

XII-F

XII-G

XII-H

XII-I

SCHOOL FACILITATORS

PRE-PRIMARY WING

PRIMARY WING

JUNIOR WING

SECONDARY WING

SENIOR WING

OFFICE STAFF

CONVEYANCE
KEY MASTERS

CARE TAKERS

HELPING
HANDS

CREATIVE STROKES

ANSHIKA YADAV (5-C)

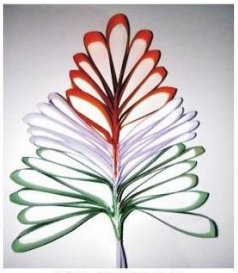

ARYA YADAV (3-C)

FRUTI PRAJAPATI (5-C)

ALISHA UMAR (4-A)

SHIVANSH MAURYA (5-C)

SAUMYA AGRAHARI (4-A)

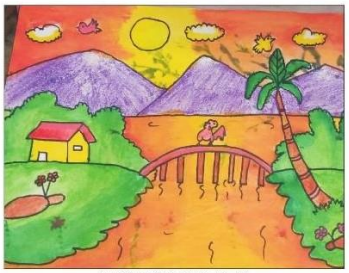

SAKSHI TIWARI (5-B)

SHRISTI DUBEY (5-C)

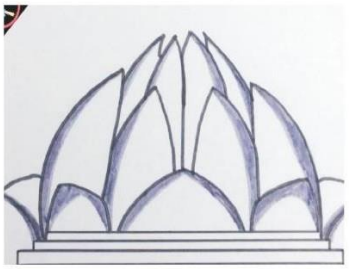

VEENA TRIPATHI (5-B)

GARIMA GAURAV (4-D)

ARADHYA AGRAHARI (3-C)

ASHISH TIWARI (4-D)

MUSKAN JAIN (6-B)

RAZA ABBAS (6-B)

SHRISTI MISHRA (6-F)

ANSHIKA BHARTI (6-D)

DHARAMVEER SAHU (6-D)

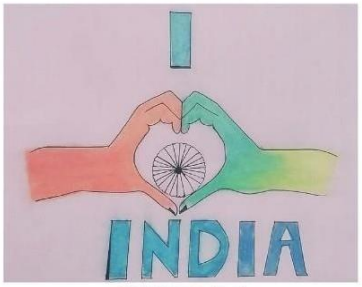

AVNI PATEL (6-F)

SHREYA TRIPATHI (6-E)

PRATIGYA MAURYA (6-D)

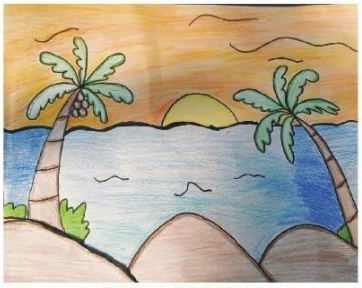

SHEETAL SINGH (6-E)

AKHIL YADAV (6-F)

RICHA AGRAHARI (6-A)

ANVESHIKA SRIVASTAVA (6-D)

SHIKSHA YADAV (6-C)

SHASHVAT AGRAWAL (6-D)

MANYA SINGH (6-D)

ANUSHKA SONI (6-C)

SHAGUN YADAV (7-A)

APOORVA AGRAHARI (7-A)

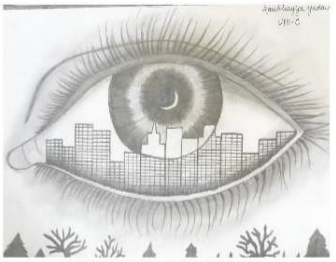

SAUBHAGYA YADAV (8-C)

ADITYA SRIVASTVA (6-A)

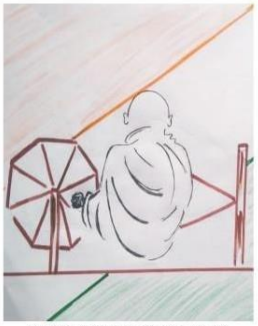

DHARAMVEER SAHU (6-D)

AISHWARY SINGH (6-A)

ASHNA SALIM (7-E)

DANIYA ATHAR (8-A)

BATOOL ZAHRA (7-B)

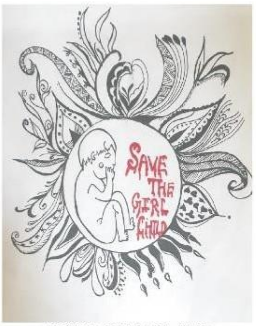

ARPITA KUMARI (8-F)

SAHER MEHDI (8-B)

CHARUL AGRAWAL (12-G)

GARIMA SINGH (9-H)

HIMANSHU YADAV (10-H)

RITU SRIVASTAVA (12-E)

RISHIJA PANDEY (12-E)

SHREYA MAURYA (11-K)

ANSHITA (11-E)

DIVYANSHI YADAV (11-J)

SATYAM KUMAR (10-E)

RASHMI MISHRA (10-F)

ARYAN MAURYA (10-D)

DHARMVEER (12-H)

ISHIKA JAISWAL (10-D)

DEEPTI RAJ (10-G)

School No. : 70086 Aff. No. 2130562

RADIANT CENTRAL CHILDREN ACADEMY

SR SEC SCHOOL AFFILIATED TO C.B.S.E. NEW DELHI

JALALPUR-AMBEDKAR NAGAR

Mob.: 9415716781, 9450489067

Email : radiantcollege@gmail.com
Website : www.radiantacademy.in